BANC-110

अनुसंधान विधियाँ

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. अनूप के. कपूर,
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
मानवविज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. रश्मि सिन्हा,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. के. अनिल कुमार
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. रूखशाना जमान,
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. पी. वेंकटरमणा,
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मीतू दास,
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू नई दिल्ली

पाठयक्रम निर्माण टीम

खंड	इकाई लेखक
खंड 1 : मानव विज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान	
इकाई 1 वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल आधार	प्रो.सुभद्रा मित्रा चन्ना (सेवानिवृत्त) मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.
इकाई 2 विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान	प्रो.सुभद्रा मित्रा चन्ना (सेवानिवृत्त) मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.
इकाई 3 मानवविज्ञान में अनुसंधान का इतिहास	प्रो.सुभद्रा मित्रा चन्ना (सेवानिवृत्त) मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.
खंड 2 : तथ्यों(डेटा) का अन्वेषण	
इकाई 4 मानवविज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा	डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 5 शोध प्रारूप (डिजाइन)	डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली
इकाई 6 प्रविधि एवं प्रणाली	डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली
इकाई 7 उपकरण एवं तकनीक	डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
खंड 3 : अनुसंधान में विशिष्ट आवश्यक पहलू	
इकाई 8 अनुसंधान में नैतिकता	प्रो. शालिना मेहता (सेवानिवृत) मानवविज्ञान विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
इकाई 9 सांख्यिकी विश्लेषण	डॉ. पी. वेंकटरमणा, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 10: तथ्य विश्लेषण	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर,, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
इकाई 11 अनुसंधान रिपोर्ट लेखन	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर,, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
व्यावहारिक निर्देशिका	डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

पाठयक्रम समन्वयकः डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

उपसंपादनः डॉ.पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता,मानवविज्ञान संकाय, इग्नू,नई दिल्ली

कार्यक्रम समन्वयकः डॉ. रुखशाना ज़मान, मानव विभान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक	इकाई
डॉ. चित्रलेखा अंशु, फ्रीलांसर, दिल्ली.	1, 2, 3,4,9
डॉ. जे.एन. सिंह, अन्वेषक (एसएस) ग्रेड– I, सामाजिक अध्ययन प्रभाग, ओआरजीआई, गृह मंत्रालय	5, 6, 8, 10, 11
सुश्री गायत्री, सामग्री लेखक, प्रकाशन अनुभाग, दृष्टि आईएएसए नई दिल्ली	7
डॉ. जे.एन. सिंह, अन्वेषक (एसएस) ग्रेड– I, सामाजिक अध्ययन प्रभाग, ओआरजीआई, गृह मंत्रालय	व्यावहारिक निर्देशिका

कवर डिजाइन : डॉ. मीतू दास

अकादमिक परामर्शदाताः डॉ. पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली, डॉ. स्मारिका अवस्थी शर्मा, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

मुद्रण प्रस्तुति

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग, इग्नू

श्री हेमन्त परीदा
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सामग्री निर्माण एवं वितरण
विभाग, इग्नू

जुलाई, 2021

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली-110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

लेज़र टाइप सेट- टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर्स

मुद्रण -

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

		पृष्ठ सं.
खंड 1	**मानव विज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान**	**11**
इकाई 1	वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल आधार	13
इकाई 2	विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान	28
इकाई 3	मानवविज्ञान में अनुसंधान का इतिहास	44
खंड 2	**तथ्यों(डेटा) का अन्वेषण**	**61**
इकाई 4	मानवविज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा	63
इकाई 5	शोध प्रारूप (डिजाइन)	76
इकाई 6	प्रविधि एवं प्रणाली	92
इकाई 7	उपकरण एवं तकनीक	104
खंड 3	**अनुसंधान में विशिष्ट आवश्यक पहलू**	**121**
इकाई 8	अनुसंधान में नैतिकता	123
इकाई 9	सांख्यिकी विश्लेषण	143
इकाई 10	तथ्य विश्लेषण	167
इकाई 11	अनुसंधान रिपोर्ट लेखन	183
व्यावहारिक निर्देशिका		**197**
सुझावित पाठ्य अध्ययन		**216**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

BANC 110 : अनुसंधान विधियाँ

पाठ्यक्रम परिचय

अनुसंधान प्रविधियों पर आधारित यह कोर्स विभिन्न अध्ययनों पर मानवशास्त्रीय अनुसंधान प्रविधियों के लिए स्नातक स्तर का परिचय प्रदान करता है। पाठ्यक्रम मानवविज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान की वैधता पर चर्चा के साथ शुरू होता है और इस बात को भी ध्यान में रखता है कि प्रसिद्ध मानववैज्ञानिकों के कार्यों के उदाहरणों के साथ मानव विज्ञान के अध्ययन में अनुसंधान कैसे सम्मिलित हुआ। पाठ्यक्रम मानवविज्ञान में क्षेत्र कार्य परंपरा के महत्व, एक अच्छे शोध प्रारूप की अनिवार्यता और इसे इसकी तैयारी की दौरान पालन किए जाने वाले विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालता है। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को गुणात्मक और मात्रात्मक प्रविधियों, प्रयोगशाला और क्षेत्र प्रविधियों, नृजातिवर्णन विधि, अवलोकन विधि जैसे विषयों की खंडों के माध्यम से जानकारी प्रदान करता है, साथ ही सार्थक तथ्य एकत्र करने के लिए नियोजित प्राथमिक और द्वितीयक, दोनों स्रोतों से जुड़े वास्तविक उपकरणों और तकनीकों से परिचित कराता है। पाठ्यक्रम का अंतिम भाग विद्यार्थियों को अनुसंधान करते समय बरती जाने वाली नैतिकता, तथ्य विश्लेषण, सांख्यिकी अथवा दोनों और शोध रिपोर्ट तैयार करने के अंतिम चरण में ध्यान रखे जाने वाले बिन्दुओं से परिचित कराता है। इस पाठ्यक्रम की योजना विद्यार्थी को मानवशास्त्रीय अनुसंधान करने के लिए मौलिक रूप से तैयार करने और प्रक्रिया में मानवशास्त्रीय ज्ञान को एकत्रित करने एवं प्रसारित करने के लिए प्रशिक्षित करने की है।

पाठ्यक्रम के परिणाम

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद, एक विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है:

- परिभाषित कर सकेंगे कि मानवविज्ञान में अनुसंधान क्या है;
- अनुसंधान करने के तरीकों और विधियों का वर्णन कर पाएंगे;
- अनुसंधान करने से जुड़े नैतिक पहलुओं को पहचाने; तथा
- यह व्यक्त कर सकेंगे कि अनुसंधान का विश्लेषण कैसे किया जाता है और कैसे शोध रिपोर्ट तैयार की जाती है।

पाठ्यक्रम प्रस्तुति

पाठ्यक्रम को तीन खंडों और एक व्यावहारिक निर्देशिका में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खंड में एक विषय होता है, जो इकाइयों के रूप में परिलक्षित होता है। इस पाठ्यक्रम के प्रत्येक खंड में कुल 11 इकाइयाँ हैं। नीचे हम आपको एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करते हैं कि प्रत्येक इकाई में विषयगत खंडों के अंतर्गत क्या शामिल है।

खंड 1 मानवविज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान

पहला खंड अनुसंधान विधियों पर पाठ्यक्रम का परिचय है, यह मानवविज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान कैसे किया जाता है, इसकी व्याख्या के साथ शुरू होता है। इसलिए पहली इकाई, (इकाई 1) ***वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल आधार*** यह समझाने का प्रयास करती हैं कि विज्ञान क्या है और हम इसे सामान्य ज्ञान से कैसे अलग कर सकते हैं। यह इकाई विद्यार्थियों को विज्ञान समझने के पारंपरिक तरीकों का स्पष्ट

विवरण और उसकी विधियों की परिभाषा में हुए परिवर्तनों से परिचित कराती है। दूसरी इकाई, (इकाई 2) ***विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान***, परिभाषित करती है कि किस तरह के अनुशासन मानवविज्ञान से शुरू होते हैं और फिर मानवविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में मान्य करने का प्रयास करते हैं। यह इकाई एक विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान की स्थिति का समालोचनात्मक विश्लेषण भी करती है। यह विद्यार्थी को इस बात पर पुनर्विचार करने में सहायता करेगा कि विज्ञान क्या है, और इस संदर्भ में मानवविज्ञान कहाँ ठहरता है। इस खंड की तीसरी और अंतिम इकाई (इकाई 3) ***मानवविज्ञान में अनुसंधान का इतिहास*** है। यह इकाई अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में मानवविज्ञान में विकसित हुई अलग–अलग प्रवृत्तियों का वर्णन करती है। यह दर्शाती है कि विकास के विभिन्न चरणों में मानवशास्त्रीय अनुसंधान कैसे विकसित हुआ। अनुशासन के विकास के साथ ही शोध के तरीके में भी कैसे बदलाव आए। इस इकाई का मूल उद्देश्य यह दिखाना है कि कैसे समय के साथ मानवशास्त्रीय अनुसंधान विकसित हुआ है और वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए कैसे इसका अलग–अलग उपयोग किया जा सकता है।

खंड 2 तथ्यों(डेटा) का अन्वेषण

इस खंड में चार इकाइयाँ हैं, जो मानव विज्ञान में क्षेत्र कार्य की बुनियादी अवधारणाओं और विधियों से संबंधित हैं। पहली इकाई (इकाई 4) को ***मानवविज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा*** कहा गया है और इसे इस खंड की महत्वपूर्ण इकाई में से एक माना जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह हमें एक क्षेत्र विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान की विशिष्टता के बारे में सूचित करता है। इस इकाई में इस बात की भी समीक्षा की गई है कि कैसे पूर्व के मानवविज्ञानी आर्म चेयर अध्ययनकर्ता थे, और बाद में कैसे समय के साथ वास्तविक क्षेत्र कार्य पर ध्यान दिया गया। इकाई इस बात की एक झलक देती है कि वर्तमान में विद्यार्थियों के लाभ हेतु नैतिक मुद्दों और मानदंडों को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र कार्य कैसे किया जाता है। दूसरी इकाई (इकाई 5) ***शोध प्रारूप (डिजाइन)*** है। यह इकाई काफी हद तक विद्यार्थी को यह बताती है कि वास्तव में शोध समस्या को हल करने के लिए शोध प्रारूप का होना कितना महत्वपूर्ण है। इकाई अनुसंधान प्रारूप के प्रकारों पर भी चर्चा करती है, जिसे शोधकर्ता अध्ययन हेतु चुन सकता है और अनुसंधान की रूपरेखा बनाने के लिए शोध प्रारूप में शामिल चरणों पर चर्चा करता है। यह इकाई विद्यार्थी की तब सहायता करेगी, जब वह किसी शोध विषय पर अनुसंधान के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर काम करने की योजना बना रहा हो। तीसरी इकाई (इकाई 6) ***प्रविधि एवं प्रणाली*** है। यहां शिक्षार्थी को कार्यप्रणाली और विधियों के बारे में समझाया गया है और यह भी कि कैसे उनके बिना शोध अधूरा है। अतः स्पष्ट है कि कार्यप्रणाली वह रणनीति है, जो एक शोधकर्ता बनाता है, सामान्यतः मानवविज्ञान में अनुसंधान की सभी प्रमुख प्रविधियों को शामिल किया गया है। इस खंड की अंतिम इकाई (इकाई 7) ***उपकरण और तकनीक*** है। इस इकाई में मानवविज्ञान अनुसंधान में उपयोग किए जाने वाले सभी महत्वपूर्ण उपकरणों और तकनीकों को सावधानीपूर्वक शामिल किया गया है। उपकरण और तकनीक क्षेत्र कार्य करने के लिए शोधकर्ता द्वारा चुनी गई विधियों पर आधारित हैं। यह इकाई मानवविज्ञान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षार्थी को अपने शोध के लिए सबसे उपयुक्त तकनीकों का चयन करने में सहायक होगा।

खंड 3 अनुसंधान में विशिष्ट आवश्यक पहलू

यह इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है। इस खंड की पहली इकाई (इकाई 8) ***अनुसंधान में नैतिकता*** है। इस इकाई में अनुसंधान के नैतिक पहलू को शामिल किया गया है। सर्वप्रथम नैतिकता से जुड़े सैद्धांतिक सरोकारों पर बात होती है, उसके बाद इकाई उन नैतिक सरोकारों के साथ आगे बढ़ती है, जिनका ध्यान एक शोधकर्ता को अनुसंधान करते समय रखना चाहिए। इस इकाई में नैतिक मुद्दों जैसे सूचित सहमति, गोपनीयता की दुविधा आदि पर विचार किया गया है। इस खंड की दूसरी इकाई (इकाई 9) ***सांख्यिकीय विश्लेषण*** है। यह इकाई विभिन्न प्रकार के चर, सांख्यिकीय तकनीकों और सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर उपकरण जैसे एसपीएसएस आदि का वर्णन करती है और यह बताती है कि मानवशास्त्रीय अनुसंधान में सांख्यिकी क्यों महत्वपूर्ण है। तीसरी इकाई (इकाई 10) को ***तथ्य विश्लेषण*** कहा गया है। यह इकाई इस बात पर चर्चा करती है कि तथ्य संग्रह के बाद, नए ज्ञानोत्पादन के लिए उपयुक्त निष्कर्षों का विश्लेषण कैसे किया जा सकता है। इसलिए इस इकाई में विभिन्न विधियों की व्याख्या की गई है, जो तथ्य विश्लेषण में मदद करती हैं। इस खंड और इस पाठ्यक्रम की अंतिम इकाई (इकाई 11) ***अनुसंधान रिपोर्ट लेखन*** है। यह इकाई अनुसंधान के अंतिम चरण पर चर्चा करती है, जहां तथ्य एकत्रण और विश्लेषण के उपरांत रिपोर्ट, थीसिस या शोध प्रबंध बनाया जाना है। इकाई बताती है कि लेखन के प्रत्येक भाग को क्रमिक रूप से कैसे किया जाना है, रिपोर्ट में परिणामों को तालिकाओं, आंकड़ों, ग्राफ़, फोटो आदि जैसी सहायक सामग्री के साथ किस प्रकार प्रदर्शित करना है और अंत में रिपोर्ट की उचित प्रस्तुति के साथ कैसे नया ज्ञानोत्पादन करना है।

व्यावहारिक निर्देशिका : यह व्यावहारिक निर्देशिका शिक्षार्थी को शोध प्रारूप बनाने में सहायता करेगी और उन्हें निर्देशिका में चर्चा की गई विधियों और तकनीकों के साथ वास्तविक शोध परिदृश्यों में लागू करने के लिए तैयार करेगी। शिक्षार्थी इन तकनीकों की जांच करने और उनका अभ्यास करने में सक्षम होंगे और भविष्य में शोध कार्य में इन्हीं विधियों और तकनीकों का उपयोग कर छोटी–बड़ी परियोजनाएँ बना सकेंगे। इस प्रकार, व्यावहारिक निर्देशिका विद्यार्थी को अनुसंधान करने के तरीकों और तकनीकों की पहचान करने में मदद करेगा, विद्यार्थी शोध करने के स्पष्ट तरीके से परिचित होगा और शोध परिणामों का विश्लेषण करना सीखेगा।

पाठ्यक्रम के बारे में इस संक्षिप्त जानकारी के साथ, अब आप प्रत्येक पाठ को व्यापक तरीके से पढ़ने के लिए तैयार हैं। जैसा कि आप अध्ययन का बड़ा हिस्सा स्वयं कर रहे होंगे, पाठों को इस तरह से बनाया गया है जिससे आपको पाठ्यक्रम को समावेशी तरीके से समझने में मदद मिल सके। यह सलाह दी जाती है कि आप क्रमिक रूप से पाठ्यक्रम को पूरा करें ताकि स्पष्टता के सूत्र को न खोएं। जिस तरह आप कक्षा में एक शिक्षक को विषयगत और कालानुक्रमिक तरीके से पाठ्यक्रम पढ़ाते हुए पाएंगे, उसी तरह आपको भी इकाई 1 से अपने पाठ्यक्रम का अध्ययन प्रारम्भ कर अंतिम इकाई, इस मामले में इकाई 11 के बाद प्रायोगिक नियमावली, के साथ समाप्त करने की आवश्यकता है। आपके लिए आसान और बेहतर समझ बनाने के लिए इकाइयों को आगे अनुभागों और उप–अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक इकाई अधिगम के परिणामों के साथ शुरू होती है, जो यह बताती है कि इकाई पढ़ने के बाद आपसे क्या अपेक्षा की जाती है। इकाइयों में 'अपनी प्रगति जाँचें' भी शामिल हैं ताकि आपको स्वयं को परखने में मदद मिल सके कि आपने जो पढ़ा है उसे सीख लिया है

या नहीं। यह पाठ के बारे में जानने का एक अच्छा तरीका है और बाद में आपको अपनी सत्रांत परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी करने में मदद करेगा क्योंकि आप अपने उत्तरों को केवल अनुभागों से कॉपी और पेस्ट करने के बजाय अपने शब्दों में बनाना सीखेंगे। प्रत्येक इकाई में अंत में एक सारांश भी होता है, जो आपको इस बारे में एक संक्षिप्त जानकारी देता है कि पाठ में क्या शामिल है। इकाइयाँ उन संदर्भों के साथ समाप्त होती हैं, जो पाठ के माध्यम से उल्लिखित कार्यों का हवाला देते हैं और 'आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर' हैं, जो आपको यह जानने में सहायता करते हैं कि आपके प्रश्नों के उत्तर कहाँ रखे गए हैं। स्मरण रहे कि यद्यपि उत्तर यहाँ दिए गए हैं किंतु आपको उत्तरों को अपने शब्दों में तैयार करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे इकाइयों की आपकी समझ में स्पष्टता आएगी। आपके आंतरिक सत्रीय कार्यों में, आपको ऐसे प्रश्न/गतिविधियाँ दी जाएँगी, जहाँ आप अपनी विधियों और तकनीकों के बारे में अपने सीखने का परीक्षण कर सकते हैं।

अध्ययन के लिए आपको शुभकामनाएँ !

यह आशा की जाती है कि यह पाठ्यक्रम मानववैज्ञानिक शोधकर्ता बनने की आपकी इस यात्रा में एक बुनियादी और प्रारंभिक प्रशिक्षण प्रदान करेगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1
मानव विज्ञान में वैज्ञानिक अनुसंधान

इकाई 1
वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल आधार

इकाई 2
विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान

इकाई 3
मानवविज्ञान में अनुसंधान का इतिहास

इकाई 1 वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल आधार*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 विज्ञान एवं सामान्य बोध

1.2 वैज्ञानिक पद्धति

1.3 कानून

1.4 विज्ञान की बदलती धारणाएँ

1.5 सामाजिक विज्ञान

1.6 मानव विज्ञान एक विज्ञान है?

1.7 सारांश

1.8 संदर्भ

1.9 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र सीखेंगेः

- यह स्पष्ट करने में कि विज्ञान क्या है और यह सामान्य बोध से कैसे अलग है;
- विज्ञान को समझने के शास्त्रीय तरीकों का वर्णन करने; और
- हाल के समय में विज्ञान और इसकी विधियों की परिभाषा के संबंध में हुए परिवर्तनों की पहचान करने में।

1.0 परिचय

इससे पहले कि हम मानवविज्ञान में अनुसंधान की विधियों की बारीकियों को समझे, हमें शुरू से आरंभ करने की आवश्यकता है। यह अध्याय इस बात की व्याख्या करेगा कि शोध क्या है और यह वैज्ञानिक रूप में कैसे सही है।

विज्ञानसम्मत होने के नाते किसी भी चीज़ को सही और तार्किक मानने की हम सभी को आदत है।'विज्ञान' या वैज्ञानिक शब्द सम्मान की भावना और विश्वास की भावना को भी जोड़ता है। जब कोई चीज़ 'वैज्ञानिक' शोध से समर्थित हो, सामान्यतः इसे सत्य मान लिया जाता है। हालांकि विज्ञान और सत्य का संबंध इतिहास की उपज है, जो औपनिवेशीकरण से जुड़ा है। क्योंकि हम जिसे आज विज्ञान और वैज्ञानिक विधि के रूप में समझते हैं, वह ज्ञान का एक विशेष रूप है जो पश्चिम में, विशेषतः उत्तरी यूरोपीय तथा दक्षिण औपनिवेशिक मातृ देशों में आरंभ हुआ था। तथाकथित वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार आरोपित पदानुक्रमिक शक्ति का परिणाम था। इसलिए, यह विश्वास

*योगदानकर्ताः प्रो.सुभद्रा मित्रा चन्ना (सेवानिवृत्त) मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.
अनुवाद–डॉ. चित्रलेखा अंशु, फ्रीलांसर, दिल्ली.

कि केवल पश्चिमी विज्ञान ही विज्ञान था, यह हर जगह व्यापक रूप में फैल गया। यदि हम स्वीकार करते हैं कि विज्ञान सत्य की खोज के साथ–साथ मानव अस्तित्व की समस्याओं को हल करने के लिए एक उपकरण है, तो विज्ञान ने उस दिन से शुरुआत की जब प्रातिनूतन (प्लायस्टोसीन) युग के आरंभिक दिनों में एक आदिम मानव या महिला ने एक पत्थर उठाकर इसे एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया होगा।

मानव प्रजाति के रूप में अपने विकास के शुरुआती समय से ही वे अपने पर्यावरण को सुधारने, अपने उपयोग के लिए उपकरण के निर्माण और प्रयोग की क्षमता से परिपूर्ण थे। वे इस बारे में भी जिज्ञासु थे कि उनके आसपास क्या हो रहा था। उनके पास जो सवाल थे उनके जवाब भी ढूंढ लेते थे। इस प्रकार ज्ञान की खोज के रूप में विज्ञान की शुरुआत और मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में इसका अनुप्रयोग उतना ही पुराना है जितना कि मानव। बाद में जो हुआ वह इस ज्ञान और उसके वर्गीकरण को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करने के लिए था, जिस तरह के सवालों के जवाब देने थे और जिस क्षेत्र में ज्ञान लागू किया जाना था। उदाहरण के लिए खगोल विज्ञान विज्ञान का सबसे पुराना क्षेत्र है। प्राचीन मनुष्यों ने अपने पर्यावरण के बारे में कई सवालों के जवाब देने के लिए आकाश की ओर देखा और उन्होंने मौसम की भविष्यवाणी करने, दिशाओं को खोजने और समुद्री रास्तों के लिए सितारों और स्वर्गीय पिंडों को पढ़ने का विज्ञान सीखा। इस इकाई में हम विज्ञान और सामान्यबोध(कॉमन सेंस) के बीच के अंतर पर चर्चा करेंगे।

1.1 विज्ञान एवं सामान्यबोध

हालांकि यह समझने की बात है कि विज्ञान को आज हम किस रूप में देखते हैं, जिसका उपयोग आम गतिविधियों से उत्पन्न हुए दिन–प्रतिदिन की समस्याओं के हल के लिए किया जाता है। वास्तव में कई पूर्व–साक्षर समाज, जैसे उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी को कहते हैं, जिन्हें वायुगतिकी का गहरा ज्ञान था, जिसके कारण वे बूमरैंग जैसा वापस लौट आने वालेउपकरण बनाने में सक्षम हुए। लेकिन विज्ञान और जिसे अब हम स्वदेशी(देशज) ज्ञान के रूप में जानते हैं, के बीच अंतर यह है कि विज्ञान घटना के स्पष्टीकरण की तलाश करने के लिए एक व्यावहारिक लक्ष्य की उपलब्धि से परे है। सामान्य संबंध की स्थापना परिवर्तनशील स्थिति में इस स्पष्टीकारण को दर्शाती है कि ये चीजे क्यों हुई, न कि उन्हें ऐसा करने से रोकने के लिए। इस प्रकार विज्ञान यह समझाने की कोशिश करेगा कि बूमरैंग कैसे और क्यों लौटता है, ठीक वैसे ही जैसे यह औषधीय उद्देश्यों के लिए एक पौधे के उपयोग से परे जाएगा और पौधे के सटीक रासायनिक घटक और रोग से उसके संबंध को स्थापित करने की कोशिश करेगा।

विज्ञान ज्ञान को व्यवस्थित और सुनियोजित करने की कोशिश करता है ताकि बड़ी संख्या में प्रक्रियाओं और तथ्यात्मक आंकड़ों की तुलना और वर्गीकरण करके यह कटौती करने में सक्षम हो, जो तर्क की शक्ति के साथ–साथ सहज अंतर्दृष्टि के माध्यम से निर्मित होता है, नियमितताओं को स्थापित करता है जो समय पर सामान्यीकृत सिद्धांत या कानून बन जाते हैं।उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों को वायुगतिकी के वास्तविक सिद्धांतों के बारे में पता था जो जिसने उन्हें

बूमरैंग बनाने के लिए प्रेरित किया, तो वे इसका प्रयोग दूसरे उपकरण बनाने में भी किए होंगे तथा वे हवाई जहाज बनाने में भी सक्षम हो सकते थे।

वैज्ञानिक प्रयास के एक हिस्से के रूप में प्रणालीगत मूल्य और ज्ञान के वर्गीकरण का मूल्य एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक ढांचे के तहत बड़ी संख्या में घटनाओं को एक साथ लाने का प्रभाव है; उदाहरण के लिए, गुरुत्वाकर्षण के नियमों का उपयोग सेब के गिरने से लेकर ग्रहों की गति तक की घटनाओं और कार्यों की एक विशाल श्रृंखला को समझाने के लिए किया जा सकता है।

सामान्य बोध और विज्ञान के बीच एक और महत्वपूर्ण अंतर यह है कि ये पूर्व अनुभव और अवलोकन से प्राप्त होता है और इस तरह ठीक काम करता है जब तक कि उसके अनुप्रयोग की शर्तें समान हों; लेकिन वे बदलती परिस्थितियों से निपटने में सक्षम नहीं हैं और यह भी कि वे अपने ज्ञान के अनुप्रयोग की श्रेणी में विविधता कैसे लाएं क्योंकि वे किसी विशेष अनुप्रयोग के मूल सिद्धांत या कारण संबंध से अवगत नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त सामान्यबोध पर्यवेक्षण की भाषा सटीक नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिए, लोग कह सकते हैं कि यदि पानी गर्म होता है, तो वह कुछ समय बाद उबलता है, लेकिन वे उस सटीक तापमान को नहीं जान पाएंगे जिस पर वह उबलता है। वास्तव में सटीक तापमान और सटीक समय जैसी अवधारणाओं को वैज्ञानिक शब्दावली के बाहर नहीं जाना जाता है। जब आम लोग ऐसे मामलों के बारे में बात करते हैं तो वे सन्निकटन की भाषा का उपयोग करते हैं, और विज्ञान सटीक भाषा का प्रयोग करता है, यहां तक कि बहुत उच्च स्तर तक की सटीकता का। इस प्रकार सूक्ष्मता और सटीकता वैज्ञानिक भाषा को सामान्यबोध से अलग करती है।

विज्ञान का एक अन्य पहलू इसकी पूर्वानुमेयता है, जो सटीक कारण संबंध के ज्ञान पर आधारित है जो एक घटना का कारण बनता है; जैसे विज्ञान जानता है कि प्रयोगशाला में पानी कैसे बनाया जा सकता है, लेकिन सामान्यबोध का ज्ञान, सटीक प्रेरक संबंध का अभाव एक हिट और ट्राइल मेथड पर निर्भर हो सकता है।

वैज्ञानिक अवलोकन भी अधिक अमूर्त प्रकृति का है और सामान्यता अवलोकन की तुलना में सामान्यीकरण के उच्च स्तर पर पेश की जाती हैं जो सीधे तौर पर मानव आवश्यकताओं से संबंधित हैं। वास्तविक जीवन के लिए उनके संभावित प्रयोग के बावजूद अधिकांश विज्ञान विशुद्ध रूप से गूढ़ कारणों से किया जाता है जो ज्ञान की शुद्ध अमूर्त खोज के लिए है। इस प्रकार उदाहरण के लिए, जो लोग परमाणु की संरचना की खोज में तल्लीन थे, एक परमाणु बम बनाने के बारे में नहीं सोच रहे थे! विज्ञान ने अब तक अपने आप को उस ज्ञान के परिणामों से दूर कर दिया है जो वह पैदा करता है जबकि सामान्य बोध मानव समाज और रोजमर्रा के जीवन में स्थापित है।

अब हमें इस बात की जांच करनी चाहिए कि वैज्ञानिक पद्धति और स्पष्टीकरण के साधनों का क्या अर्थ है।

अपनी प्रगति जाँचें 1

1) वैज्ञानिक सोच सामान्य बोध से कैसे अलग है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) वैज्ञानिक सोच की सबसे गूढ़ विशेषता क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.2 वैज्ञानिक पद्धति

वैज्ञानिक पद्धति में कई प्रकार के स्पष्टीकरण शामिल हैं, जो विभिन्न तरीकों से किसी भी घटना के संबंध में स्पष्टीकरण या निष्कर्ष पर पहुंचता है।

निगमनात्मक विधि सभी प्रकार की वैज्ञानिक विधियों में सबसे उच्च और सम्मानित विधि है। इसमें विश्लेषण की विशुद्ध तार्किक प्रक्रिया सम्मिलित है और यह गणित और संबंधित विषयों पर सबसे अधिक लागू होती है। सामाजिक विज्ञानों में यह आमतौर पर कुछ हद तक अवलोकन और प्रासंगिक संदर्भ से जुड़ा होता है। लेकिन निगमन के स्पष्टीकरण में एक सार्वभौमिक सत्य का कम से कम एक आधार होना चाहिए। उदाहरण के लिए गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के कानून का निगमनात्मक तर्क सार्वभौमिक आधार द्वारा समर्थित है कि पृथ्वी पर सब कुछ जमीन पर गिर जाएगा; अगर चीजें उड़ रही थी और अगर गिरने के बजाय केवल एक ही वस्तु उड़ती है, तो किसी को ऐसा होने के पर्याप्त कारण की तलाश करनी होगी और ऐसा कारण जो गुरुत्वाकर्षण के नियम के अंतर्गत हो। यदि कोई कारण नहीं पाया जाता है तो मूल आधार को छोड़ना पड़ता है और यह सार्वभौमिक स्वीकृति होना बंद हो जाता है। यह हमेशा संभव है कि कुछ बुनियादी आधारों को जिन्हें सच मान लिया गया था उन्हें छोड़ दिया जाना चाहिए। फिर उस आधार पर बनाए गए कानून को भी छोड़ना पड़ता है।

उदाहरण के लिए नस्लवाद(रंगभेद) एक आधारभूत सिद्धांत था जो इस आधार पर था कि मानव को श्रेष्ठ और हीन में वर्गीकृत किया जाता है, लेकिन डार्विन के सिद्धांत ने साबित कर दिया की होमो सेपियंस एक प्रजाति है और जिसके सभी सदस्य समान हैं, इस प्रकार रेस सिद्धांत को एक वैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में खारिज कर दिया गया था यद्यपि यह केवल सामाजिक रूप में जारी रह सकता है।

निगमनात्मक सिद्धांत का श्रेय अरस्तु को दिया जाता है, जिन्होंने इसे वैज्ञानिक व्याख्या का एक निश्चित पहलू माना। विज्ञान के अंतिम लक्ष्य के रूप में सामान्य कानूनों के निर्माण में निगनात्मक प्रक्रिया आवश्यक है। निरूपण के नियम का मतलब है कि बड़ी संख्या में भी स्पष्ट रूप से असमान घटना को एक सामान्यीकृत बयान के

साथ समझाया जा सकता है; उदाहरण के लिए गति पर न्यूटन के नियम। वैज्ञानिक विधि का अंतिम लक्ष्य एक तरह से घटना का संगठन और वर्गीकरण है जो हमारी समझ को आगे बढ़ाता है कि क्या हो रहा है। इसलिए बड़ी संख्या में घटनाओं को न्यूटन के नियमों के साथ समझाया जा सकता है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उन लोगों के लिए स्पष्टीकरण है जिन्हें समझाया नहीं जा सकता है।

वैज्ञानिक विधियों की सहायता से निर्मित किए गए सिद्धांत दो या अधिक घटनाओं को एक निश्चित तरीके से जोड़ते हैं, जैसे कि विकासवाद का सिद्धांत जो संशोधन के साथ प्रजातियों के वंश उत्पत्ति का वर्णन करता है। मूल रूप से सिद्धांत हमें बताता है कि प्रजातियां बहुत ही मिनटों में अपने पूर्वजन्म में संशोधन से गुजरती हैं, या यह कि एक संतान कभी भी अपने माता–पिता के समान नहीं होता है और ये मिनट परिवर्तन हजारों वर्षों के पैमाने पर एक लंबे समय तक एक पीढ़ी का उत्पादन करने के लिए जमा होते हैं। किसी भी सिद्धांत का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसे कभी भी सीधे साबित नहीं किया जा सकता है। एक सिद्धांत की बहुत ही सामान्य प्रकृति इसे अदृश्य या गैर–अवलोकन योग्य बनाती है। उदाहरण के लिए कोई भी विकासवाद इसे नहीं देख सकता। लेकिन विकास के अस्तित्व का चित्रण मामलों द्वारा और इसके अनुप्रयोग की सार्वभौमिकता से भी किया जा सकता है।

सभी कानून कुछ संबद्ध जटिलताओं पर आधारित होते हैं, उदाहरण के लिए विकास का जैविक कानून प्रजनन के सार्वभौमिक आधार पर आधारित है, जो कि सभी प्राणी अपने माता–पिता की संतान हैं। यह एक सार्वभौमिक है या जिसे प्रकृति के नियम के रूप में जाना जाता है। ऐसा कानून प्राप्त नहीं होता बल्कि इसे एक शर्त के रूप में लिया जाता है। सभी निगमनात्मक तर्क में इसकी व्याख्यात्मक स्थितियों में कम से कम एक सार्वभौमिक या प्राकृतिक आधार होना चाहिए।

अरस्तू के अनुसार, जिसे एक स्पष्टीकरण के ज्ञानात्मक या संज्ञानात्मक पक्ष के रूप में जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, हम एक व्याख्यात्मक आधार के बारे में क्या जानते या अनुभव करते हैं। एक व्याख्यात्मक आधार को सच होना चाहिए और एक वैज्ञानिक व्याख्या में सत्य का प्रदर्शन या ज्ञान होना भी आवश्यक है। लेकिन जैसा कि नागेल ने बताया (1979: 43) अगर बहुत दूर तक इसे फॉलो किया जाता है, तो यह वैज्ञानिक स्पष्टीकरण को अवरुद्ध कर सकता है जो कभी कभी सहजबोध या संकेत द्वारा प्राप्त होता है। "क्या इसे अपनाया गया था, यदि इन में से कुछ आधुनिक विज्ञान द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण को संतोषजनक रूप में अपनाया जा सकता था"। हालांकि यह आवश्यक है कि व्याख्यात्मक जटिलता ज्ञात या मौजूदा तथ्यों के साथ कम से कम सराहनीय होना चाहिए या ज्ञात टिप्पणियों द्वारा उपेक्षित नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए व्याख्यात्मक आधार 'तूफान एक पंखों वाले घोड़े के कारण हुआ था" जैसे बयान पर आधारित नहीं होना चाहिए; क्योंकि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि ऐसा घोड़ा मौजूद है या कहीं भी देखा गया है।

एक अन्य प्रकार की व्याख्या जो कमजोर है, वह यह है जिसे एक परिपत्र या पुनरावृत्ति स्पष्टीकरण के रूप में जाना जाता है। वह यह है कि स्पष्टीकरण में पहले से ही स्पष्टीकरण की शर्तें शामिल हैं; उदाहरण के लिए बारिश हो रही है इसलिए आसमान में बादल छाए रहने चाहिए।

एक संतोषजनक व्याख्या की जरूरत नहीं है, लेकिन यह व्यापक रूप से ज्ञात है, जैसे कि सूरज हर दिन उगता है, पर आधारित नहीं हो सकता है, लेकिन ऐसी चीजें शामिल हो सकती हैं जो ज्यादातर लोगों को ज्ञात या परिचित नहीं हैं। फिर भी विज्ञान का एक लक्ष्य यह है कि चीजों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सके, जैसे कि आज ज्यादातर लोग पानी के चक्र के माध्यम से वर्षा की व्याख्या जानते हैं और यह नहीं सोचते हैं कि बारिश स्वर्गीय पक्षी या किसी अन्य वस्तु के आंसू हैं। इस प्रकार विज्ञान का लक्ष्य अज्ञात को ज्ञात करना है और वह भी संदर्भ के एक तार्किक दायरे में।

अपनी प्रगति जाँचें 2

3) निगमनात्मक तर्क क्या है? यह विज्ञान को कैसे परिभाषित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) आधुनिक विज्ञान के निर्माण में अरस्तू के योगदान पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) क्या विज्ञान में विभिन्न प्रकार के स्पष्टीकरण संभव है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 कानून

एक कानून सार्वभौमिक सोपाधिकता का एक व्याख्यान है। यह अचूक और ज्यादातर अपरिवर्तनीय रूप में चित्रित है। पहली तरह का कानून, सामान्य बोध के साथ–साथ

प्रणालीगत अवलोकन पर आधारित है, जिसे लॉ ऑफ नेचर या यूनिवर्सल लॉ के रूप में जाना जाता है।

सार्वभौमिक कानूनों की परिभाषा अस्पष्ट है और अक्सर यह स्पष्टीकरण के बिना अवलोकन पर आधारित है, जैसे घोड़े नहीं उड़ते हैं। एक स्तर पर यह सार्वभौमिक अवलोकन पर आधारित है कि कोई घोड़ा कभी नहीं उड़ता हुआ जाना गया है या भविष्य में जाना जाएगा। लेकिन यह पूरी तरह से संतोषजनक या वैज्ञानिक कानून नहीं है। एक वैज्ञानिक कानून में दर्ज अवलोकन के आधार पर एक मात्र कथन की तुलना में पूर्ववर्ती और परिणामी स्थितियों के बीच एक मजबूत संबंध होना चाहिए। यदि हम उपर्युक्त कथन बनाते हैं तो यह इस संभावना के लिए नहीं है कि एक दिन एक घोड़ा मिल सकता है जो उड़ जाता है। लेकिन अगर हम केवल अवलोकन के अलावा ज्ञात और सिद्ध परिवेश में स्पष्टीकरण देते हैं, तो हम कह सकते हैं कि कुछ प्राणी उड़ सकते हैं क्योंकि उनके पास उड़ान के लिए जैविक और शारीरिक पूर्व–शर्तें हैं। जहां तक एक घोड़े को घोड़े के रूप में परिभाषित किया गया है, उसमें उड़ने वाली प्रजातियों की शारीरिक विशेषताएं नहीं हैं, और इसलिए यह कभी नहीं उड़ता है और न ही उड़ेगा। इस प्रकार हमारे भौतिक अवलोकन में हमें वैज्ञानिक रूप से निर्धारित आधार को जोड़ना चाहिए कि कोई भी जीवित वस्तु कैसे उड़ती है। अगर कभी किसी प्राणी जैसे कि उड़ते हुए घोड़े को खोजा जाता है, तो उसे वैज्ञानिक रूप से एक ऐसी श्रेणी में डाल दिया जाएगा, जो न तो घोड़ा है और न ही पक्षी, लेकिन हम कहेंगे कि एक नई प्रजाति की खोज की गई है।

आकस्मिक सार्वभौमिकता और नाममात्र (नॉमिक) सार्वभौमिकता के बीच अंतर है। यह तथ्य कि सभी बाघों की धारियां एक आकस्मिक सार्वभौमिकता होती हैं, लेकिन एक सामान्य सार्वभौमिकता पूर्ववर्ती और परिणामी स्थितियों के बीच एक तार्किक और आवश्यक संबंध पर निर्भर करती है। हालाँकि इन परिभाषाओं पर अक्सर बहस की जाती है और गहरे दार्शनिक मुद्दों को संदर्भित किया जाता है जिसकी चर्चा यहाँ नहीं की जाएगी।

विज्ञान में अधिक बार हम कारण संबंधी कानूनों से निपटते हैं, जहां परिणाम पूर्ववर्ती का प्रभाव होता है। किसी भी कारण से किसी कानून की स्थिति मानने के लिए, उसे चार शर्तों को पूरा करना होगा। इस प्रकार यदि A और B पूर्ववर्ती और परिणामी स्थितियां हैं, तो पहला यह है कि जब भी A, B का पालन करेगा, दूसरी A, B के होने के लिए एक आवश्यक शर्त है, आगे A, B और अंत में होने के लिए आवश्यक और पर्याप्त स्थिति दोनों का गठन करता है। जबकि B, A का प्रभाव है, विपरीत सत्य नहीं है, B, A के लिए आवश्यक नहीं है। ये फिर से आलोचना के लिए खुले हैं, उदाहरण के लिए सभी कारण संबंध विषम (अंतिम स्थिति) नहीं हैं; बादलों और गरज का उदाहरण के लिए एक सममित संबंध है।

सभी कानून अवलोकन पर आधारित नहीं हैं, कुछ शुद्ध तर्क पर भी आधारित हैं और उन्हें सैद्धांतिक कानूनों के रूप में जाना जाता है। वे गणित जैसे शुद्ध विज्ञान (विशुद्ध रूप से तार्किक) में पाए जाने की सबसे अधिक संभावना है। इस प्रकार पानी का वाष्पीकरण, जब अवलोकन के आधार पर एक प्रायोगिक कानून कहा जा सकता है और जब अणुओं के गुणों पर आधारित होता है, तो इसे सैद्धांतिक नियम कहा जा सकता है। उत्तरार्द्ध के ज्यादातर अवलोकन योग्य या अवलोकन से परे नहीं होते हैं,

जैसे कानून जो अनंत रेखा पर समानांतर रेखा से मिलते हैं। अवलोकन पर आधारित विधियों को आगमनात्मक कहा जाता है।

हालाँकि अधिकांश सिद्धांत अवलोकनों से संबंधित हैं, हालांकि सैद्धांतिक कानून सामान्यीकरण के उच्च स्तर पर व्यक्त किए जाते हैं और आमतौर पर सामान्यीकृत रूप में देखने योग्य नहीं होते हैं। इस प्रकार जब हम माता–पिता की संतान के रूप में बालों और आंखों के रंग और त्वचा के रंग जैसी आवश्यक विशेषताओं से मिलते–जुलते हैं, तो हम इसे प्रायोगिक नियम कह सकते हैं, लेकिन जब इसे आनुवंशिकी और संरचना और संरचना के आधार पर समझाया जाता है। गुणसूत्र, हम इसे एक सैद्धांतिक नियम कहते हैं क्योंकि गुणसूत्र और उनके संचरण को देखा नहीं जा सकता है, लेकिन केवल टिप्पणियों से अनुमान लगाया जाता है। अपने आप में एक सिद्धांत को न तो सिद्ध किया जा सकता है और न ही इसके द्वारा दिए गए द्वितीयक कथनों और परिकल्पना को सिद्ध करने के अलावा, इसे अस्वीकृत किया जा सकता है। यदि कोई अवलोकन कानून के विपरीत है, तो किसी को अतिरिक्त जानकारी की तलाश करनी होगी क्योंकि विसंगति का कारण स्वयं एक और सिद्धांत हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा अपने माता–पिता से मिलता जुलता नहीं है तो अनुवांशिक उत्परिवर्तन के एक अतिरिक्त सिद्धांत को स्पष्टीकरण के लिए संदर्भित किया जाता है।

प्रमाण के लिए कृत्रिम स्थितियों या प्रयोगशाला की स्थिति स्थापित करके भी प्रायोगिक कानूनों को साबित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि हम यह साबित करना चाहते हैं कि जल हाइड्रोजन के दो अणुओं और ऑक्सीजन के एक अणु का संयोजन है तो इस प्रक्रिया को प्रयोगशाला में निर्मित किया जा सकता है और इन कृत्रिम परिस्थितियों में बनाया गया पानी, बिल्कुल प्राकृतिक पानी की तरह होगा।

सैद्धांतिक कानूनों के विपरीत जहां सभी घटक अमूर्त हो सकते हैं, प्रयोगात्मक कानूनों के मामले में कम से कम एक घटक अवलोकन योग्य है।

प्रायोगिक कानून और सिद्धांत के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि उत्तरार्द्ध में पूर्व की तुलना में स्पष्टीकरण की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद होती है। एक सामान्य सिद्धांत कई अलग प्रकार की घटनाओं की व्याख्या कर सकता है और इसके अंतर्गत कई प्रयोगात्मक कानूनों को समाहित किया जा सकता है। एक सामान्य नियम का एक उदाहरण आर्किमिडीज का तरल पदार्थों के उत्प्लावन बल का सिद्धांत है जो विस्तृत घटनाओं की व्याख्या कर सकता है।

सिद्धांत भी केवल एक आधार है, और यह कुछ ऐसा है जिसे कुछ काल्पनिक बयानों को प्रदर्शित करने, साबित करने या अस्वीकार करने के लिए संदर्भित किया जा सकता है। यह अपने आप में एक प्रदर्शित सत्य नहीं है। एक सिद्धांत का मूल्य इसके अनुप्रयोग में निहित है और यह किस हद तक घटना की एक विस्तृत श्रृंखला की व्याख्या कर सकता है।

प्रयोग नामक यह प्रक्रिया वैज्ञानिक विधि का एक अभिन्न अंग है और प्रयोगशाला में कृत्रिम स्थिति बनाकर प्रयोग की स्थापना भी प्रक्रिया के विभिन्न हिस्सों पर अधिक नियंत्रण की अनुमति प्रदान करता है। कोई भी विभिन्न विविधताओं और नए उत्पादों के लिए इसमें हेरफेर कर सकता है। वास्तव में प्रयोग वैज्ञानिक रचनात्मकता और वैज्ञानिक ज्ञान के विकास की कुंजी है। हालांकि मुख्य रूप से नैतिकता और मानवता

के कारणों से प्रयोग की सीमाएं हैं। स्वयंसेवकों को छोड़कर मनुष्यों पर प्रयोग करना नैतिक नहीं है, खासकर अगर ऐसे प्रयोग से एक मानव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो। जानवरों पर चिकित्सा प्रयोग किए गए हैं लेकिन हाल के दिनों में इस तरह के प्रयोगों का बहुत विरोध और आलोचना हुई है। फिर भी जानवरों और मनुष्यों पर भी गुप्त रूप से प्रयोग किए जा रहे हैं। विज्ञान के नाम पर परमाणु प्रयोगों ने पर्यावरण के साथ–साथ मानव और पशु आबादी को बहुत नुकसान पहुंचाया है।

अपनी प्रगति जाँचें 3

6) एक वैज्ञानिक कानून की विशेषताएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

7) आप आकस्मिक और नाममात्र (नोमिक) सार्वभौमिकता से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

8) सैद्धांतिक कानून क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

9) प्रायोगिक कानून क्या है?

.....

.....

1.4 विज्ञान की बदलती धारणाएँ

विज्ञान के परिवर्तन की संभावना यूरोपीय पुनर्जागरण की अवधि में, जो वैज्ञानिक सोच की पश्चिमी प्रणाली के समेकन को भी चिह्नित करता है; विज्ञान को बड़े पैमाने पर कामुक अनुभूतियों की वैधता और तर्क के मानव संकाय में दोहराए गए विश्वास के संदर्भ में परिभाषित किया गया था। मौजूदा शुद्ध कारण की संभावना एक सोच के

अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है, अर्थात् मानव के। मनुष्य में एक चेतना होती है जो स्वयं को संदेह के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। संदेह उसके द्वारा वैज्ञानिक विधि की नींव के रूप में देखा गया था जिसका मूल रूप से मतलब है कि किसी को बिना कारण कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए उन्होंने स्थापित किया कि भगवान कारण की प्रक्रिया से मौजूद हैं न कि विश्वास से। इस प्रकार कारण विज्ञान का आधार है और विज्ञान का आधार संदेह है।

रेनी डेसकार्टेस को मानसिक और शारीरिक दुनिया के बीच विश्लेषण करने का श्रेय दिया जाता है; दूसरे शब्दों में मनुष्य में अमूर्त दुनिया बनाने और कल्पना करने की शक्ति है और इसे कार्टेशियन द्वंद्व के रूप में जाना जाता है जहां केवल वस्तु या घटना है जो ऊंचाई, चौड़ाई, गहराई और समय के चार आयामों द्वारा वर्णित अंतरिक्ष और समय के अक्ष पर स्थित है; जो कि भौतिक अस्तित्व है। उन्होंने मनुष्यों और जानवरों के बीच एक द्वैत भी आरोपित किया है कि जानवरों के पास कोई व्यक्तिपरक चेतना नहीं है और इसलिए उन्हें यंत्रवत वस्तु के रूप में माना जाना चाहिए न कि प्राणियों के रूप में।

आज जो कुछ उन्होंने कहा है, वह मन और बात के द्वंद्व और मानव और गैर–मानव के विभाजन को गलत साबित करता है। भौतिक दुनिया के बारे में उनका वर्णन और वास्तव में आधुनिक भौतिकी द्वारा किस पदार्थ का गठन किया गया है, की पूरी अवधारणा, जो दर्शाती है कि यह मामला केवल गति से ऊर्जा में बदल सकता है। यद्यपि विज्ञान के लिए आधार के रूप में संदेह अभी भी स्वीकार्य है, केवल कारण के माध्यम से प्रमाण का सवाल अब स्वीकार्य नहीं है क्योंकि भौतिक विज्ञानी ब्लैक होल और डार्क मैटर में तल्लीन हैं। आज जैसे–जैसे विज्ञान ज्ञान उत्पादन के साथ आगे बढ़ रहा है, भौतिक और गैर–भौतिक के बीच अंतर धुंधला हो रहा है। फिर भी आधुनिक विज्ञान के दर्शन के रूप में हम जो समझते हैं उसमें डेसकार्टस का योगदान मानव विषय की उनकी मान्यता में संदेह और सोच के रूप में है और मानवीय कारणों के रूप में उनके सत्य ज्ञान के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि साक्ष्य के प्रमाण की धारणा को विज्ञान की अवधारणा किस दिशा में ले जा सकती है, क्योंकि साक्ष्य विज्ञान में स्वीकृति का आधार हमेशा बनी रहेगा।

1.5 सामाजिक विज्ञान

उपसर्ग, विज्ञान को सामाजिक या समाज के अध्ययन में जोड़ा गया था, जब यह माना जाता था कि समाज प्राकृतिक प्राणियों की तरह हैं या सामाजिक व्यवहार उन नियमों के अधीन है जो संगठित, व्यवस्थित और कानूनों के रूप में वर्गीकृत और सामान्यीकृत होने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, एआर रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा दिये गए नातेदारी के सिद्धांत और लेवी–स्ट्रॉस द्वारा दिए गए संरचनात्मकता की अवधारणा जो एक सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में देखने का प्रयास करते हैं। मानव विज्ञान में आधुनिकता की अवधि वैज्ञानिक पद्धति के अनुप्रयोग द्वारा समाज पर डेटा के संग्रह और विश्लेषण के लिए चिह्नित की गई थी। इस प्रकार मानव विज्ञान में सिद्धांत और विधियों जैसी विज्ञान की मूल बातें हैं।इसमें मन और पदार्थ के द्वंद्व पर आधारित निष्पक्षता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी था, जैसे कि उनके अध्ययन के विषयों के प्रति एक उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने के लिए शास्त्रीय मानवविज्ञानीयों का प्रयास सम्मिलत है। इस अवधि को प्राकृतिक विज्ञान से उधार ली गई तुलनात्मक पद्धति के अनुप्रयोग

द्वारा चिह्नित किया गया था ताकि मानव विषयों और समाज पर प्रयोगशाला प्रयोगों के संचालन की असंभवता से उबरने के लिए सीमाओं को दूर किया जा सके।

तुलनात्मक विधि या तो एक अस्थायी परिप्रेक्ष्य या दो चर के बीच संबंध स्थापित करने के लिए एक स्थानिक परिप्रेक्ष्य लेती है। उदाहरण के लिए, यदि हम पारिवारिक जीवन पर टेलीविजन की शुरूआत के प्रभाव का अध्ययन करना चाहते हैं, तो एक तरीका यह होगा कि वे टेलीविजन खरीदने से पहले और बाद में एक परिवार का अध्ययन करें। हालाँकि यदि यह संभव नहीं है, तो कोई ऐसे परिवार का अध्ययन कर सकता है जिसके पास टेलीविजन है और जिसके पास नहीं है। यदि अन्य सभी चर स्थिर रखे जाते हैं तो ऐसी तुलना कुछ हद तक सफल होगी। यद्यपि बीस वर्षों की अवधि में टिकोपिया समाज में हुए परिवर्तनों को दस्तावेज करने के लिए रेमंडफर्थ के दोहरे समकालीन अध्ययन की विधि के साथ–साथ तुलनात्मक विधि द्वारा कुछ सराहनीय कार्य किए गए हैं, लेकिन यह विशेष रूप से आज की दुनिया में एक अजीब तरीका बना हुआ है जब त्वरित दस्तावेज की आवश्यकता होती है। हालांकि तुलनात्मक विधि मानव विज्ञान अनुसंधान का एक अंतर्निहित हिस्सा बनी हुई है, भले ही मौजूदा और चल रहे कार्यों के संदर्भ के माध्यम से किसी विशेष शोध की तुलना दूसरों से की जाए। आधुनिकतावादी अवधि ने उस पीढ़ी पर भी ध्यान केंद्रित किया, जिसे तथ्यात्मक 'डेटा' के रूप में माना जाता था, मात्रात्मक और मूल डेटा जैसे कि क्षेत्र की जनगणना, घरेलू बजट, वंशावली, जनसांख्यिकीय और भौगोलिक डेटा और अन्य। वैज्ञानिक पद्धति का मूल दर्शन, अर्थात् साक्ष्य आधारित सत्य ही उपयोग करने का कारण था और अभी भी अधिकांश मानवविज्ञान अनुसंधान में इसका पालन किया जा रहा है।

आइए एक नजर डालते हैं कि एलन बर्नार्ड (2000: 5) का शुद्ध विज्ञान के सिद्धांत की तुलना में मानव विज्ञान के सिद्धांत के बारे में क्या कहना है।

बर्नार्ड, सिद्धांत के चार पहलुओं पर विचार करते हैं: प्रश्न, धारणाएँ, विधियाँ और साक्ष्य। वह इन चार पहलुओं के बारे में अपनी राय इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं:

सबसे प्रासंगिक प्रश्न इस बारे में हैं कि कोई व्यक्ति क्या खोज रहा है और यह कैसे उपयोगी है। पहला प्रश्न सीधे अनुशासन की प्रकृति से संबंधित है। मानव विज्ञान में संस्कृति और समाज की प्रकृति से संबंधित प्रश्न आते हैं, वे व्यवहार के स्पष्टीकरण की तलाश करते हैं, संस्कृति के भौतिक उत्पादों के परिवर्तन के कारणों और प्रभावों दोनों को खोजने के लिए निर्देशित किया जाता है और किसी भी संख्या में प्रश्नों के संबंध में मनुष्य वैसा ही व्यवहार क्यों करते हैं जैसा वे करते हैं। दूसरा पहलू या तो गुप्त या सहायक या दोनों के अधिक बार संयोजन का परिणाम हो सकता है। वैज्ञानिक जांच को आदर्श रूप से 'शुद्ध' या 'ज्ञान के लिए ज्ञान' के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, जो ज्ञान प्राप्त हुआ, जैसे कि पदार्थ के गुणों के बारे में या आनुवंशिकता की प्रकृति के बारे में कई साधनों के लिए लागू किया गया था जैसे कि मशीन बनाना और कैंसर का उपचार। तथापि कोई प्रारंभिक जिज्ञासा को सीधे लागू क्षेत्र में अलग कर सकता है जैसे कि कोई व्यक्ति किसी विशेष बीमारी का इलाज ढूंढ रहा है या किसी नई प्रजाति की तलाश में शुद्ध जिज्ञासु द्वारा संचालित है।

जैसा कि हमने पहले से ही बुनियादी जटिलता या प्रकृति के निर्धारित कानूनों के रूप में क्या चर्चा की है। इस बिंदु पर यह उल्लेख किया जा सकता है कि धारणाएं

मानवशास्त्र की तरह एक अनुशासन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जहां विचार की विभिन्न संस्थाएं अपने अलग–अलग तरीकों से चलती हैं। उदाहरण के लिए, सभी मानवविज्ञानी मानते हैं कि समाज मनुष्य का निर्माण है किसी परमात्मा का नहीं है, वे समाजों के सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत के रूप में या आंतरिक विरोधाभासों के कारण संचालित होते हैं। कुछ लोग मान सकते हैं कि सभी सामाजिक संस्थाएं कार्यशील हैं और कुछ अन्य इससे सहमत नहीं हो सकते हैं।

किसी भी सिद्धांत का एक तीसरा पहलू उसकी विधि है। विधि अनुसंधान करने के परिचालन पहलू को संदर्भित करती है लेकिन यह सिद्धांत से निकटता से संबंधित है। कुछ सिद्धांत एक समकालिक पद्धति से जुड़े हैं, जहाँ डेटा को ज्यादातर चीजों के लिए संग्रहित करने की आवश्यकता होती है, जैसा कि वे हैं, लेकिन कुछ अन्य जो बदलाव या सामाजिक परिवर्तन पर जोर देते हैं, उन्हें इतिहास को संदर्भित करने की आवश्यकता है। यहां तक कि परिवर्तन की समझ अलग है, उदाहरण के लिए शास्त्रीय संरचनात्मक कार्यात्मक पद्धति में, परिवर्तन को बाहरी प्रणाली के रूप में देखा गया था और इस तरह से अध्ययन किया गया था, लेकिन मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन प्रणाली के लिए आंतरिक है और इसलिए अध्ययन इतिहास की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करेगा। अध्ययन की विधि इस प्रकार मूल धारणाओं के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है कि कोई भी विद्वान या सैद्धांतिक स्कूल विचार के संबंध में है कि वे कैसे देखते हैं कि समाज क्या है या संस्कृति क्या है, और व्यक्ति और समाज के बीच क्या संबंध है और क्या समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य शामिल होना चाहिए या नहीं।

साक्ष्य का अंतिम पहलू, सैद्धांतिक दृष्टिकोण पर फिर से काफी हद तक निर्भर करता है; कुछ मानवविज्ञानी जिनके पास प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण है, वे सोच सकते हैं कि साक्ष्य (सबूत) केवल बाहर से एक उद्देश्य और निष्पक्ष विधि द्वारा एकत्र किए जा सकते हैं, जबकि जो लोग अधिक विषयवस्तु के बारे में सोचते हैं वे मुखबिरों के कथनों और सदस्यों के विश्वासों और मूल्यों से प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार कुछ लोग तुलनात्मक विधि में विश्वास कर सकते हैं और कुछ का मानना है कि किसी भी सामाजिक घटना के व्यापक सबूत के लिए मानवविज्ञान विधि समग्र हो सकती है।

अपनी प्रगति जाँचें 4

10) सामाजिक विज्ञान प्रयोगात्मक विधि का उपयोग कैसे कर सकता है?

.....

.....

.....

11) एक सिद्धांत के घटक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

12) मानवविज्ञान का सिद्धांत शुद्ध विज्ञान से किस तरह से अलग है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 मानव विज्ञान एक विज्ञान है?

अंत में आइए हम अंतिम और महत्वपूर्ण प्रश्न पर आते हैं कि क्या मानवविज्ञान एक विज्ञान है? इस मुद्दे पर काफी बहस हुई है, क्योंकि कुछ विद्वानों की राय है कि चूंकि मानवविज्ञान, मानव व्यवहार से संबंधित है, इसलिए इसे विज्ञान नहीं माना जा सकता। मनुष्य एक इच्छा के साथ सचेत प्राणी है, इसलिए उनके व्यवहार को प्रतिबंधात्मक ढांचे के भीतर नहीं समझा जा सकता है। एक वैज्ञानिक कानून का एक चरित्र पूर्वानुमान है और दूसरा सामान्यीकरण है। यद्यपि मानव समाजों के लिए कुछ संरचनात्मक कानूनों को लागू किया गया है, लेकिन इस बात की संभावना हमेशा बनी रहती है कि व्यक्ति अपना व्यवहार बदल सकते हैं या पहले से मौजूद संस्थाएं समय के अनुसार परिवर्तित हो सकती हैं।

इस प्रकार यांत्रिकी के नियम जड़ निकायों पर लागू होते हैं, जबकि समाज के कानून संवेदनशील, जीवित प्राणियों पर अपनी मर्जी से लागू होते हैं। हालाँकि समाज के अपने मानदंड होते हैं और सभी सामाजिक क्रियाएं कुछ नियमों से बंधी होती हैं, वहाँ हमेशा व्यक्तिगत असंतोष की संभावना होती है। कुछ विद्वानों और कुछ दृष्टिकोणों के अनुसार, लेवी–स्ट्रॉस की तरह, मानव व्यवहार की नियमितता सतह पर दिखाई देने वाली चीज़ों की तुलना में एक गहरी परत पर होती है और इसलिए मानवविज्ञान संबंधी मतभेदों का नियमितता से पता चलता है जो विश्लेषक द्वारा खोजे जा सकते हैं। यह दृश्य विज्ञान के सकारात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि करता है कि जो चीजें बहुत अलग दिख सकती हैं, वे एक अंतर्निहित सिद्धांत की पुष्टि कर सकती हैं, जो आम व्यक्ति और सामान्य बोध के लिए स्पष्ट नहीं हैं। यह इस विश्वास में भी योगदान देता है कि विज्ञान विशुद्ध रूप से उद्देश्यपूर्ण है और सभी सांस्कृतिक और व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह को पार करता है।

हालांकि बाद के औपनिवेशिक युग में जब विज्ञान के क्षेत्र को इन बहुत ही जटिलताओं में समेट दिया गया था, अर्थात् यह कि विज्ञान पश्चिम में विकसित हुआ था, उतना विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ के रूप में नहीं था क्योंकि यह होने के लिए इसे निर्देशित किया गया था, जो कि दोनों यूरोसेंट्रिक(यूरोपकेंद्रित) और एंड्रोसेंट्रिक (पुरुषकेंद्रित) थे; यह केंद्रिकता यह है कि श्वेत पुरुष को तर्कसंगत और तार्किक सोच के लिए मानक के रूप में लिया गया था; और गैर–श्वेत, महिलाएं और यहां तक कि यूरोपीय देशों के लोगों को भी आदिमता, अज्ञानता और बौद्धिक विकलांगता के विभिन्न स्तरों पर देखागया। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान नारीवादी विद्वानों द्वारा किया गया था। सैंड्रा हार्डिंग (1993:4) बताती हैं कि एंड्रोसेंट्रिकिज्म भौतिकी और तर्क, गणित, अमूर्त सोच, वस्तुनिष्ठता के मानक और अच्छी विधि जैसे क्षेत्रों में भी इस

धारणा को पाया जा सकता है कि ये गुण या क्षमताएं केवल कुछ खास प्रकार के मनुष्यों, अर्थात् श्वेत और पुरुष व्यक्तियों में ही संभव हैं।

वैज्ञानिक निष्पक्षता की आलोचना और पश्चिमी विज्ञान जैसे नस्लवाद और पर्यावरणीय विनाश द्वारा की गई गिरावट को पश्चिम में वैज्ञानिक समुदाय द्वारा भी स्वीकार किया जा रहा है। हार्डिंग (1993: 6) के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका के नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज अब वकालत करते हैं कि वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ यादृच्छिक चयन के स्वीकृत और प्रसिद्ध मापदंडों से परे व्यापक होना चाहिए, डबल–ब्लाइंड ट्रायल और ठीक से प्रशासित नियंत्रणों में व्यक्तिपरक निर्णयों को भी सम्मिलित किया गया है जिसे वैज्ञानिक डेटा की विश्वसनीयता और विश्लेषण में आकलन करते समय प्रयोग करते हैं। किसी विशेष शोध को समाप्त करने के निर्णय के साथ–साथ अध्ययन के लिए समस्याओं को प्राथमिकता देने या चुनने के लिए किए गए निर्णय भी अनुसंधान के महत्वपूर्ण पहलू हैं जहाँ राजनीतिक और आर्थिक विचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उदाहरण के लिए, अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने एचआईवी–एड्स से संक्रमित रोगियों और जॉर्ज डब्ल्यू बुश जूनियर द्वारा स्टेम सेल अनुसंधान में आगे के शोध से इनकार कर दिया।पद्धति में वह तरीका भी शामिल है जिसमें ज्ञान का आदान–प्रदान किया जाता है या दूसरों को और सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध कराया जाता है। दूसरे शब्दों में आर्थिक और राजनीतिक के साथ–साथ सांस्कृतिक संदर्भों में भी विज्ञान की अंतर्निहितता अब अच्छी तरह से पहचानी जाती है।

विज्ञान के बारे में बदलते परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में, न केवल हम मानवविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में पहचान सकते हैं, बल्कि यह भी कि मानवविज्ञान एक प्रभावी वैज्ञानिक कार्यप्रणाली के निर्माण में योगदान दे सकता है जो इसे आगे बढ़ाएगा, जिसे हार्डिंग ने 'हार्ड ऑब्जेक्टिविटी' कहा है। व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह को हटाना इसकी मान्यता से ही संभव है।

अपनी प्रगति जाँचें 5

13) पाश्चात्य विज्ञान के खिलाफ़ की गई आलोचनाओं पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

14) वैज्ञानिक पद्धति के संबंध में बदलते दृष्टिकोण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में छात्रों ने पारंपरिक रूप से विज्ञान के साथ–साथ इसके ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भों के बारे में समझा है, इसकी मूल बातें सीखी हैं। शिक्षार्थी वैज्ञानिक विधियों के साथ–साथ सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभावों के संबंधो के उन महत्वपूर्ण बहसों से अवगत हुए हैं जो विज्ञान की परिभाषा के साथ–साथ इसकी कार्यप्रणाली को भी आकार प्रदान करते हैं।

1.8 संदर्भ

Barnard, A. (2000). *History and Theory in Anthropology*. Cambridge: Cambridge University Press

Harding, Sandra (ed.). (1993).*The "Racial" Economy of Science*. Bloomington: Indiana University Press

Nagel, E.(1979). *The Structure of Science: Problems in the Logic of Scientific Explanations*. Delhi: Macmillan India Ltd (original Routledge and Kegan Paul)

1.9 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1) अनुभाग1.1 देखें।

2) अनुभाग 1.1 देखें।

3) उत्तर हेतु अनुभाग 1.2 का तीसरे पैरे का संदर्भ लें।

4) अनुभाग 1.2 देखें।

5) अनुभाग 1.2 का उद्धरण लें।

6) अनुभाग 1.6 के पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।

7) अनुभाग 1.3 देखें।

8) अनुभाग 1.3 के 5,6,7 पैराग्राफ का संदर्भ लें।

9) अनुभाग 1.3 के 5,6,7,8 पैराग्राफ का संदर्भ लें।

10) अनुभाग 1.3 एवं 1.5 देखें।

11) अनुभाग 1.2 के पैराग्राफ 3 व 4 तथा अनुभाग 1.3 के पैराग्राफ 1,3 एवं अनुभाग 1.5 के छठे पैराग्राफ का संदर्भ लें।

12) कृपया अनुभाग 1.5 देखें।

13) अनुभाग 1.6 के चौथे पैराग्राफ का संदर्भ लें।

14) कृपया अनुभाग 1.4 एवं 1.6 देखें।

इकाई 2 विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान*

इकाई की रूपरेखा

2.0 परिचय

2.1 क्या मानवविज्ञान एक विज्ञान है?

2.2 विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान की स्थिति की समीक्षा

2.3 सामाजिक विज्ञान का परिप्रेक्ष्य

2.4 क्या विज्ञान वही है जो हम सोचते हैं?

2.5 विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान

2.6 सारांश

2.7 संदर्भ

2.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद, छात्र निम्नलिखित बातें सीखेगें:

- एक विषय अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान की प्रकृति को परिभाषित करना ,
- एक विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान का आकलन करना,
- एक विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान की स्थिति की समीक्षा करना,
- विज्ञान का पुनर्विचार और इसके संबंध में मानवविज्ञान को स्थापित करना।

2.0 परिचय

20 वीं शताब्दी की शुरुआत में जब मानविज्ञान एक अनुशासन के रूप में शुरू हुआ, तो यह एक विज्ञान के रूप में था। आज भी यह कुछ संस्थानों में विज्ञान के पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता है और कुछ में सामाजिक विज्ञान के हिस्से के रूप में। मानवविज्ञान की पहचान सबसे पहले विज्ञान के रूप में की गई थी, ये वे प्रश्न थे जिनके प्रति यह स्वयं को एक अनुशासन के रूप में निर्देशित करता था, अर्थात् मानव प्रजातियों का विकास और मानव भिन्नता की बातें। चूंकि, यह मनुष्यों को संबोधित कर रहा था;अतःइन दोनों पहलुओं को सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों को शामिल करने के लिए जैविक संबंध के द्वारा आगे बढ़ना था तथा जैविक विकास के साथ–साथ सांस्कृतिक विकास के अध्ययन ने मानवविज्ञान की तीसरी शाखा यानी पुरातत्व / प्रागैतिहास को जन्म दिया। भाषाविज्ञान के साथ मानवविज्ञान को मानव होने के सभी पहलुओं को कवर करने वाली मानव प्रजातियों के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में पहचाना गया था। प्रारंभिक चरण में एक वैज्ञानिक अध्ययन एक आवश्यक

*योगदानकर्ता–प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, (सेवानिवृत्त) पूर्व विभागाध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली.**अनुवाद**–डॉ. चित्रलेखा अंशु, फ्रीलांसर, दिल्ली.

लेबल था; क्योंकि विभिन्न विषयों के बारे में मिथकों से छुटकारा पाने के लिए एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान की स्थापना के कारण थे मानव आबादी, संस्कृतियां और समाज, विशेष रूप से नस्लवाद, यूरोसेट्रिज्म और गलत धार्मिक विचारों से उत्पन्न अंधविश्वासों द्वारा शासित धारणाएं। इस प्रकार मनुष्य का वैज्ञानिक अध्ययन जैसा कि तब समझने की बात थी , वैज्ञानिक स्वभाव, दृष्टिकोण और विधि को मनुष्यों के अध्ययन में लाना था।

2.1 क्या मानवविज्ञान एक विज्ञान है?

एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान का उद्देश्य उन सभी गलत विचारों को दूर करना था जो मनुष्य के बारे में समझा जाता था, जैसे कि कुछ मानव आबादी को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन माना जाता था, कुछ मनुष्यों के स्वाभाव दूसरों से अलग होते हैं और संस्कृतियां सभ्य या असभ्य। एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान का उद्देश्य मूल्य मुक्तव्यवस्थित और संशयवादी होने की वैज्ञानिक पद्धति को लागू करना था। परंतु पूर्व कथित केवल प्रमाण या सबूत के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्वीकार करता है।

मनुष्यों के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण प्रतिमान बदलाव, जो मनुष्यों को वैज्ञानिक अध्ययन को संभव बनाता है, वह था मनुष्यों की दिव्य उत्पत्ति के मिथक को तोड़ना। दुनिया की हर संस्कृति, चाहे उसका स्थान कही भी क्यों न हो और वह मिश्रित या छोटे पैमाने पर हो, एक पहलू समान है, उन सभी में मनुष्यों की उत्पत्ति की एक कहानी है, जो किसी अन्य दूसरे सांसारिक स्रोत से संबंधित है। मानवविज्ञान का विज्ञान होना मानव को एक पशु प्रजाति के रूप में पहचानना था, जो जैविक दुनिया का हिस्सा था और प्रकृति के नियमों के अधीन था, न कि किसी दैवीय शक्ति के। मुख्य समस्या यह पता लगाना था कि मनुष्य किस प्रकार विकसित होते हैं और वे अपने विकास के मार्ग की पहचान करते हैं तथा विविधीकरण भी करते हैं। मनुष्य अलग क्यों दिखते हैं और उनके पास अलग–अलग समाज और संस्कृतियाँ क्यों हैं, भले ही महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वे प्रारंभिक अवस्था में एक समान थे।

एक विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान पर विचार करने का औचित्य एक विशाल खोज और वैचारिक पारी में निहित था : मानव प्रजातियों को अन्य जानवरों की प्रजातियों में से एक के रूप में मानने के लिए। अब मनुष्य केवल दिव्य प्राणी की एक विशेष रचना थे। वे मूल जीवित कोशिका से अन्य सभी जानवरों के रूप में विकसित हुए थे, मनुष्यों के अध्ययन के तरीके वही थे जो अन्य जानवरों की प्रजातियों का अध्ययन करने के थे। इसलिए विज्ञान की प्रत्यक्षवादी पद्धति को मनुष्यों और उनके विकास और समाज के अध्ययन में लागू किया जाना था।

प्रत्यक्षवाद के नियमों में निहित है कि व्यक्ति वैज्ञानिक अलगाव के साथ अध्ययन के उद्देश्यों से संपर्क करता है, जो निष्पक्ष और बिना किसी पूर्वकल्पित विचारों के होता है। जिसे किसी बाहरी कारणों से प्रभावित हुए बिना, गैर–निर्णयात्मक और तर्कसंगत रहना चाहिए। वैज्ञानिक पद्धति के लिए प्रमाण(साक्ष्य) या प्रमाण और तार्किक सोच दोनों आवश्यक थे।

विज्ञान का उद्देश्य सामान्य सिद्धांतों या नियमों की पहचान करके विविधताओं की समझ बनाने के लिए व्यवस्थित और तार्किक श्रेणियों को वर्गीकृत करना तथा कैसे और क्यों के सवालों का जवाब देना था, जिसे कारण संबंधी समीकरण के माध्यम से समझाया गया है और बुनियादी अंतर्निहित सिद्धांतों की पहचान करने के लिए भी है, जो घटना की एक विस्तृत श्रृंखला की व्याख्या करेगा। मानव विज्ञान ने ठीक यही करके एक अनुशासन के रूप में अपनी यात्रा शुरू की।

शास्त्रीय विकासवाद, प्रसारवाद, संरचनात्मक कार्यात्मकता और संरचनावाद में जैविक विज्ञान से उधार ली गई तुलनात्मक पद्धति के उपयोग द्वारा सामान्यीकृत कानूनों का वस्तुनिष्ठ श्रेणी में करने का प्रयास किया गया था। तुलनात्मक पद्धति को मानवविज्ञान के विषय के रूप में उपयुक्त देखा गया; क्योंकि यह उन मनुष्यों पर निर्भर था, जिन्हें प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक वस्तुओं के रूप में नहीं माना जा सकता था।एक वैज्ञानिक पद्धति के अधिकांश पहलुओं को मानव विज्ञान के लिए अनुकूलित किया गया था, वहीं प्रायौगिक पद्धति को एक व्यक्ति की तरह दूसरों पर लागू करना असंभव था।

प्रयोग मानवविज्ञान की संभावना की कमी की पूर्ति के लिए बने हुए डेटा के संग्रह में अनुभववाद और अधिक कठोरता में बदल गया। फील्डवर्क, रिकॉर्डिंग, अनुसूची और प्रश्नावली बनाना, मापना और तौलना, तस्वीरें लेना और ड्रॉ करना, ये सभी वैज्ञानिक तकनीकों का हिस्सा थे जिसे मानवविज्ञानी क्षेत्रकार्य में ले गए थे।

विज्ञान का लक्ष्य और उद्देश्य अकाट्य सत्य तक पहुंचना था। यदि विज्ञान द्वारा कुछ निश्चित और कुछ अपरिवर्तनशील साबित किया गया था तथा यदि इसे किसी प्रक्रिया या अन्य विधि द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया था, तो इसे अस्वीकार करना पड़ा। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक विश्वास के रूप में मानी जाने वाली किसी भी चीज़ के संबंध में लचीलेपन के लिए कोई स्थान नहीं है। इसलिए उम्मीद यह थी कि अगर किसी मानवविज्ञानी ने किसी विशेष समुदाय के बारे में लिखा है तो इसे एक निश्चित सत्य के रूप में अधिक या थोड़ा तो लिया ही जा सकता है।

लेकिन अविश्वास के दो संभावित रास्ते थे, जिनकी अनदेखी की गई थी; जब यह माना जाता था कि मानव के साथ व्यवहार करते समय एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण संभव था। एक के लिए प्राकृतिक वस्तुओं के विपरीत मनुष्यों में महत्वाकांक्षा होती है और वे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने में सक्षम होते हैं तथा मानदंडों का पालन कर सकते हैं। शायद यही वह वजह है कि रेडक्लिफ–ब्राउन का मतलब यह था, जब उन्होंने सामाजिक संरचना और संरचनात्मक रूप के बीच अंतर किया था और जब मेयर फोर्ट्स ने संरचना का निर्धारण करने में मात्रात्मक विधि के उपयोग की वकालत की थी,जो वास्तव में संरचनात्मक ढंग से मौजूद है जिसके अस्तित्व की उम्मीद की जा सकती है। लेवी–स्ट्रॉस ने भी यांत्रिक और सांख्यिकीय मॉडल के बीच एक अंतर किया था, एक जो नियम आधारित है और एक वह जो क्रिया आधारित है। हालाँकि सभी ने यह माना कि कुछ बुनियादी नियम, मानदंड और सिद्धांत एक चल रहे समाज में काम करेंगेः विशेष रूप से 'कोल्ड '(लेवी–स्ट्रॉस)समाजों में जिसमें अपने शुरुआती चरण में मानव विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित किया था।

दूसरा यह था कि प्राकृतिक प्रणालियों (जैसे कि ग्रह प्रणाली) के विपरीत समाज और संस्कृतियां बदलती थीं और कभी–कभी इनकी गति अधिक तेजी से होती थी।

उदाहरण के लिए यदि हम पारंपरिक भारतीय समाज में रैडक्लिफ़–ब्राउन के नातेदारी के सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास करते हैं, तो हम अक्सर एक आनंद की अनुभूति करते हैं और यह हमारे ऊपर अच्छी तरह से लागू होता है। छात्र अपने परिवारों में *देवर और भाभी* के बीच मौजूद मजाकिया रिश्तों की समझ से खुश होते हैं या फिर उन्हें वैसे अंतर को समझने की जरुरत होती है जो उन्हें सास की पहचान देती है। यदपि भारतीय शहर के मूल परिवार में ऐसे रिश्ते में तेजी से बदलाव आ रहा है. अब एक बहु अपने ससुर से परहेज नहीं करती है, और दोनों खुशी से जींस पहनकर पिकनिक पर चले जाते है। इस प्रकार समाज में यांत्रिकी के नियमों की तरह एक अपरिवर्तनीय कानून बने रहने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण विषयवस्तु के वे प्रश्न हैं, जो न केवल सूचकों के संबंध में, बल्कि फील्ड वर्कर्स या शोधकर्ता के संबंध में भी उठते हैं। वास्तव में इस विषयवस्तु को अब केवल सामाजिक विज्ञान और मानविकी तक ही सीमित नहीं किया गया है, बल्कि कठिन विज्ञान का भी एक मुद्दा है, जिसके लिए हम इस इकाई में बाद में लौटेंगे। लेकिन आइए, हम पहले यह देखें कि एक विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान की आधारशिला को इसने कैसे उद्वेलित कर दिया।

अपनी प्रगति जांचें 1

1) एक विज्ञान के रूप में अपनी स्थिति को मान्य करने के लिए मानवविज्ञान पर लागू होने वाली पद्धति क्या थी?

.....

.....

.....

.....

.....

2) मनुष्य के विज्ञान के बारे में विचार करने से पहले किन प्रतिमानों को बदलना आवश्यक था?

.....

.....

.....

.....

.....

3) ऐसे कौन से कारक हैं जिनके कारण मानव विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान नहीं माना जा सकता है?

.....

.....

.....

4) प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण क्या है? क्या इसे मानव विज्ञान पर लागू किया जा सकता है? समीक्षकों का मूल्यांकन।

.....

.....

.....

.....

.....

2.2 विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान की स्थिति की समीक्षा

मानवविज्ञान संबंधी टिप्पणियाँ और डाटा के स्तर के विषय में शुरुआती संदेह उसके विज्ञान होने की स्थिति के बारे में हुआ था, जो मार्गरेट मीड, ब्रॉनिस्लाव, मालिनोवस्की और रॉबर्ट रेडफील्ड जैसे प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा एक समान कार्य क्षेत्र में किए गए पुनः अध्ययन और व्यापक विमर्शों के नाम से जाना जाता है। डेरेक फ्रीमैन, एक मध्य आयु वर्ग के पुरुष मानव विज्ञानी, जो समोआ में मार्गरेट मीड के रूप में एक ही कार्य क्षेत्र का दौरा करने के दौरान एक चौंकाने वाला खुलासा कियाःउनके सूचकों ने उन्हें बताया कि उन्होंने जानबूझकर 'युवा लड़की' को गलत सूचना दी थी, जो "मूर्खतापूर्ण" सवाल पूछ रहे थे। फ्रीमैन के अनुसार उन्होंने यह भी जोड़ा था कि चूंकि वह (फ्रीमैन) एक आदमी होने के साथ–साथ अधिक परिपक्व थे, इसलिए वे उन्हें अधिक विश्वसनीय डेटा दे रहे थे। यह बहस तब जारी हुई जब फ्रीमैन ने साठ के दशक की शुरुआत में अपने स्वयं के फील्डवर्क के बाद मीड की आलोचना के बारे में लिखना शुरू किया, जहां वे मीड के किशोरावस्था के आघात और सिमोन के सांस्कृतिक निर्धारणवाद और कामुकता के प्रस्ताव से असहमत थे।

फ्रीमैन ने सभी मानव आबादी की मनोवैज्ञानिक और जैविक एकता का समर्थन किया इसलिए वे मीड की अधिक सांस्कृतिक व्याख्या से असहमत थे जिन्होंने एकता के बजाय मत भिन्नता पर जोर दिया। लेकिन जो स्पष्ट रूप से सामने आया वह यह था कि एक ही क्षेत्र का दो या दो से अधिक भिन्न विद्वानों द्वारा अलग–अलग विश्लेषण किया जा सकता है, यदि वे अलग–अलग सैद्धांतिक मत के हैं। इस बहस के दौरान जो बात उभर कर आई, वह थी लिंग या शोधकर्ता (उनकी/उनके) के अन्य चरित्रों का प्रश्न जो एनेट्टे वेनर (1976) के प्रकाशन से जुड़ा हुआ था। इसमें ट्रोब्रिअंड द्वीपों के बारे में बताया गया था, जिसमें खुलासा हुआ था कि मास्टर फील्डवर्क और महान विद्वान मालिनोवस्की ने एक सम्मान समारोह में कहा था कि उन्होंने कभी भी महिलाओं की समाज में अर्थव्यवस्था में योगदान पर ध्यान नहीं दिया। सत्तर के दशक में प्रकाशित वेनर की किताब ने पहले के विवादों पर, जैसे कि रोबर्ट रेडफिल्ड और ऑस्कर लुईस के बीच टोज़ोज़टन पर मार्शल सह्लिंस और गनानाथा ओबेसेकेरे के बीच कैप्टन कुक पर तथा गैर–पश्चिमी लोगों की तर्कसंगतता का अनुसरण किया (सहलिंस 1995)।

अगर मानव विज्ञान को वास्तव में प्रत्यक्षवादी अर्थों में एक विज्ञान के रूप में अपनी स्थिति का बचाव करना था, तो यह अलग–अलग विद्वानों को एक ही डेटा के विभिन्न

विश्लेषणों के साथ आने का जोखिम नहीं दे सकता था, भले ही यह समय की अवधि के बाद किया गया हो। मीड–फ्रीमैन विवाद के दौरान एक प्रमुख संकेतक दो अध्ययनों के बीच समय के बीच का अंतरालः तीस के दशक में मीड का और साठ के दशक में फ्रीमैन ने समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन को जन्म दिया, क्योंकि सिमोन ने ईसाईयत के प्रभुत्व के कारण महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर को देखा था। लेकिन उस समय इसने समाज और संस्कृतियों के अध्ययन में अस्थायीपन या समय की भूमिका के मुद्दे को भी उजागर किया।

इस प्रकार एक विज्ञान के रूप में परिभाषित होने के लिए मानव विज्ञान को कुछ आधारभूत सिद्धांतों की तलाश करनी थी, जिसे समय बदलाव या शोधकर्ता की व्यक्तिपरकता के द्वारा नहीं बदला जा सकता है। फ्रीमैन ने जीव विज्ञान और मनोविज्ञान तथा लेवी–स्ट्रॉस ने द्विभाजन या प्रतिरोध पर आधारित मानव मन की सार्वभौमिक संरचना को अपना आधार बनाया जो कि डाइकोटोमियों या विरोधों पर आधारित है। फिर भी मानव विज्ञान का हमेशा ऐसा बना रहा, जो इसे हार्ड कोर विज्ञान से अलग करता है तथा मानवविज्ञान ग्रंथों के लेखन से जोड़ता है।

मालिनोव्स्की से लेकर क्लिफर्ड गीट्ज़ तक और सबसे पुराने मानववैज्ञानिक ग्रंथों से वर्त्तमान तक एक आयाम, जो मानव विज्ञान को भौतिकी और जीव विज्ञान जैसे अन्य विज्ञानों से अलग करता है, वह यह है कि सभी मानववैज्ञानिक डेटा और विश्लेषण को एक पाठ के रूप में लिखा जाना है। रेडक्लिफ–ब्राउन और लेवी–स्ट्रॉस जैसे प्रत्यक्षवादियों ने भी सुंदर ग्रंथों की रचना की है। वास्तव में एक सफल मानवविज्ञानी बनने का एक मापदंड अच्छी तरह से लिखने में सक्षम होना है। मानवविज्ञानी को अपने क्षेत्र को इस तरह से पाठक के सामने प्रस्तुत करना होता है कि वे इसे स्पष्ट रूप से देखें। यहां तक कि अगर मात्रात्मक या सांख्यिकीय डेटा है, तो ऐसा डेटा शायद ही कभी विवरण के बिना समझ में आता है। जहां तक मानव समाजों का संबंध है, व्यवहार या किसी भी प्रकार की सांख्यिकीय घटना का मात्र वर्णन अधूरा है या यहां तक कि समझने योग्य भी नहीं है;अगर कोई ऐसी घटना या कार्रवाई के पीछे का कारण नहीं जानता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई विशेष आबादी के लिंगनुपात को समझना चाहता है तो यह सूचना तब तक मानवविज्ञान के हित में नहीं है, जब तक वह इसके पीछे के सही कारणों को खोलने में समर्थ न हो। जैसा कि सभी सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानी और यहां तक कि जैविक मानवविज्ञानी की बात है, पदार्थवादी रूप में नहीं किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, किसी भी सामाजिक घटना के होने में जटिल और कई कारणों के होने की संभावना बनी रहती है। इस प्रकार किसी भी सामाजिक घटना के कारणों की व्याख्या करने के लिए कोई केवल एक सूत्र नहीं लिख सकता है। हालांकि मानवविज्ञानी लेस्ली व्हाइट, जो भी प्रत्यक्षवादी स्कूल से संबंधित थे, एक-दूसरे के संबंध में और संस्कृति के विकास को इंगित करने के लिए एक सूत्र लेकर आए थे। लेकिन लेस्ली व्हाइट (1939) ने भी वर्णनात्मक पाठ और उदाहरणों के साथ अपने समीकरणों का समर्थन किया था।

मानव वैज्ञानिकों द्वारा मानव व्यवहार को सरल और आकस्मिकता के प्रत्यक्ष समीकरणों को कम करने के प्रयास पर काम नहीं किया गया। यह समझने के लिए कि आंशिक रूप से, मनुष्य जैसा व्यवहार करते हैं वैसा करते क्यों हैं? इसे समझने के लिए उसे

उस व्यवहार के बहुआयामी चरित्र का पता करना होगा तथा विश्लेषण की जटिलता में जाना होगा, जो आकस्मिक स्थिति और संबंध से परे जाता।

कोई भी विज्ञान काफी हद तक अपने स्वयं के विषय वस्तु पर ही सीमित है। यद्यपि कुछ विशेष घटनाओं के परिप्रेक्ष में किसी को इसकी सीमाओं का विस्तारीकरण करना पड़ता है और अंतर विषय के प्लेटफॉर्म से वस्तुओं को देखना पड़ता है।

लेकिन सामान्य रूप से यदि कोई भौतिकी में काम कर रहा है, तो उसे भौतिकी के दायरे में रहना पड़ेगा और यदि कोई पौधे के व्यवहार का अध्ययन कर रहा है, तो वह वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में ही सीमित रहेगा। एक विज्ञान को परिभाषित करने के इस सिद्धांत के अनुरूप ईमाइल दुर्खीम, जिसे अक्सर समाजशास्त्र या सामाजिक विज्ञान के पिता के रूप में जाना जाता है, ने कहा था कि एक सामाजिक तथ्य को केवल अन्य सामाजिक तथ्यों के माध्यम से ही समझाया जा सकता है। इस सिद्धांत को ब्रिटिश स्कूल ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजिस्ट ने ए.आर. रेड क्लिफ ब्राउन के नेतृत्व में अपनाया था, जिन्होंने विशेष रूप से एक वैज्ञानिक अध्ययन के तरीके से अनुशासन की सीमाओं को आकर्षित किया।

लेकिन बोआस की अध्यक्षता वाले अमेरिकी स्कूल ने सांस्कृतिक घटना को समझाने के लिए मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक और पर्यावरणीय परिवर्तनशीलता को शामिल करने के लिए विस्तार दिया। समकालीन मानव विज्ञान में हम साहित्य, प्रदर्शन कला और कविता जैसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक डेटा का व्यापक उपयोग करते हैं। क्षेत्र के साथ विद्वान के व्यक्तिपरक अंतःक्रिया के उत्पाद के रूप में मानवशास्त्रीय पाठ भी तेजी से देखा जा रहा है। यह व्यक्तिपरक अंतर संबंध भी एक संज्ञानात्मक ढांचे के भीतर स्थित है, न कि एक उद्देश्यगत पृष्ठभूमि में।

आइए, अब हम एक मानव विज्ञान के संज्ञानात्मक और व्यक्तिपरक आयामों को एक अनुशासन के रूप में व्यापक रूप से जांचते हैं कि यह एक विज्ञान के रूप में अपनी स्थिति को कैसे प्रभावित करता है।

अपनी प्रगति जांचें 2

5) फ्रीमैन–मीड विवाद क्या था? एक विज्ञान के रूप में इसने मानवविज्ञान की स्थिति को कैसे प्रभावित किया?

.....

.....

.....

.....

6) मालिनोवस्की की नृवंशविज्ञान के खिलाफ किस तरह की आलोचना की गई और किसके द्वारा की गई?

.....

.....

.....

7) दुर्खीम ने सामाजिक विज्ञान को कैसे परिभाषित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 सामाजिक विज्ञान का परिप्रेक्ष्य

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक, यूरोपीय पुनर्जागरण में रेनी डेकार्टेस और फ्रांसिस बेकन की पसंद से स्थापित वैज्ञानिक पद्धति पर व्यापक रूप से सवाल उठाए जा रहे थे (पत्ती, 1979)। बेकन ने वैज्ञानिक पद्धति के सार को सामने रखा, जिसमें सटीक अवलोकन,सटीक रिकॉर्डिंग और किसी भी बाहरी स्रोत जैसे कि धर्मशास्त्र और पौराणिक कथाओं की पुनरावृत्ति के बिना देखे गए तथ्यों को शामिल करना, जैसे प्रश्नों की पूछताछ की जा रही थी : "क्या यह एक तथ्य का गठन करता है?"'अवलोकन कितना विश्वसनीय है?'और सटीक रिकॉर्डिंग का क्या मतलब है? मानवीय विषयवस्तु के पहलुओं, मानवीय दृष्टि और मानव तकनीक की गिरावट पहले से ही उठाई गई थी। लेकिन, दृश्य घटनाविदों और व्याख्यात्मक सिद्धांतों के संज्ञान में किसी भी घटना की मानव समझ से संबंधित मुद्दों को और ही उठा दिया। मुख्य अंतर्निहित आधार यह कहता है कि मनुष्य एक संज्ञानात्मक रूप से निर्मित दुनिया पर कब्जा कर लेता है, जो कि वस्तुगत वास्तविकता की एक प्रतीकात्मक अमूर्तता है, अगर ऐसी कोई भी चीज़ हो तो।

जैसा कि इतिहासकार बरज़ुन देख रहे हैं (2000: 194) कि विज्ञान के रूप में मौजूद होने के लिए एक शुद्ध शरीर का अस्तित्व होना चाहिए, हर प्रकार की व्यक्तिपरकता से एक मुक्त शरीर मौजूद होना चाहिए और मात्रात्मक रूप से देखने तथा रिकॉर्ड करने में सक्षम होने के लिए शुद्ध रूप से भौतिक होना चाहिए। लेकिन मनुष्य के पास ऐसा शरीर नहीं है। मन और पदार्थ की द्वंद्वात्मकता या मानव मन और मानव शरीर के विषय में डेसकार्टेस (Decartes) द्वारा केवल अनुमान लगाया गया है जो उपलब्ध नहीं है। पीटर विंच (1958), अपनी मौलिक किताब *द आइडिया ऑफ ए सोशल साइंस* में लिखते हैं कि मनुष्य कुछ भी समझ सकते हैं, जो वे केवल उस भाषा की वास्तविकता से संबंधित है, जिसका वे उपयोग करते हैं। हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा के माध्यम से ही सब कुछ बाहर आता है। भाषा के बिना दुनिया का अस्तित्व नहीं है, क्योंकि यह हमारी समझ से परे है। उदाहरण के लिए किसी भी रंग को बिना नाम के हम नहीं समझ सकते हैं।

इस प्रकार जब हम किसी समाज का वर्णन करते हैं, तो यह उस भाषा के बारे में हमारी आतंरिक समझ के संदर्भ में होता है जिसे हम जानते हैं। उदाहरण के लिए, एक खेत के क्षेत्र में प्रवेश करने पर एक मानवविज्ञानी स्वयं से कहेगा :बहुत अच्छा, "ऐसा प्रतीत होता है कि वे लोग हमारे खेतों में बीज बो रहे हैं"। लेकिन यह सरल कथन भी केवल किसी भाषा के भीतर भी नहीं बोला जाता है, बल्कि कई पूर्व

अवधारणाओं को भी दुबारा उस कथन में निर्धारित करता है।कोई निश्चित रूप से चेतना, जीवन भावुक,एक व्यक्ति और एक आदमी को समझता है, हम किसी चीज़ को एक बीज, एक कृषि भूमि के भाग इत्यादि के रूप में समझते हैं। समझने की बात यह है कि ये सभी शब्द एक अवधारणा का उल्लेख करते हैं, जो वास्तविकता की एक कल्पना है। एक वस्तविकता जिसे हम कभी नहीं समझ सकते; क्योंकि हमारे पास इसके लिए कोई शब्द नहीं है।

इस प्रकार हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो दोनों एक सामान्य भाषा और ब्रह्मांड विज्ञान के उपयोग द्वारा संज्ञानात्मक रूप से निर्मित और साझा की जाती है। इस जीवनकाल से परे या दूर की समझ की कोई संभावना नहीं है। मानवविज्ञानी के रूप में, किसी अन्य संस्कृति को समझने का एक प्रयास इस संज्ञानात्मक दुनिया में प्रवेश करना है.इसे एक की अपनी भाषा में अनुवाद करके और फिर अनुशासन की भाषा में विद्वानों के समुदाय में दूसरों से संवाद करने का प्रयास करना है। एक साधारण अभ्यास के रूप में कपोल–कल्पना के विभिन्न स्तरों को समझने की कोशिश करते हैं, जो एक अवधारणा के लिए आया है, जैसे कि 'मजाक का रिश्ता' मानवशास्त्रीय शब्दावली में प्रकट किया गया है।

इसलिए जे.पी मिल्स एवं अन्य विद्वानों के साथ वैचारिक असहमति है कि सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान एक ही तार्किक संरचना का पालन करते हैं। सामाजिक व्यवहार का एक छात्र को यहां तक कि अपने स्वयं के तथाकथित वैज्ञानिक शब्दावली को विकसित करते हुए भी) मौजूदा अवधारणाओं की ओर आकर्षित होना पड़ता है। एक विद्वान फील्ड में वास्तव में मानव निर्मित गतिकी और आवाज़ का निरीक्षण करता है, लेकिन यह सब बता कर उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिए उसे इन सारी चीजों को साझा अवाधारणाओं की भाषा में परिवर्तित करना पड़ेगा। इस प्रकार मानवविज्ञानी जो भी कच्चे डेटा का निर्माण करता है, वह केवल एक संज्ञानात्मक क्षेत्र से प्राप्त होता है, जो संस्कृति और भाषा के प्रतीकात्मक दुनिया की मध्यस्थता से प्राप्त होती है।

इसलिए, जैसा कि विंच कहते हैं (1990: 115), जब हम सामाजिक विज्ञानों में कुछ समझते हैं तो यह एक समीकरण के सन्दर्भ में नहीं बल्कि अध्यनन द्वारा ही। इस अर्थ में इसमें व्यक्तिपरकता अपने आप शामिल है, जो आंतरिक संवाद में भी संलग्न है, यहां तक कि यह सूचनादाताओं के साथ एक संवाद में भी। एक समझ के रूप में यह प्रकट होता है कि कैसे विषय वस्तु ने शोधकर्ता को स्थापित किया, जो अपने स्वयं के संज्ञानात्मक स्क्रीन के माध्यम से जानकारी का अवशोषण एवं निष्कर्षण करता है। इसे एक सामान्य रूप से स्वीकृत भाषा के माध्यम से संवाद करने से पहले आतंरिक संवाद के रूप में समझा जा सकता है।

इस प्रकार एक सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में ज्ञान के रूप में डाली गई सभी जानकारी व्यक्तिपरक रूप से स्वयं के माध्यम से फ़िल्टर होता है। चूँकि कोई भी मानव केवल एक शरीर नहीं है,स्वयं की यह मध्यस्थता उन सभी में स्पष्ट है जो डेटा के रूप में प्रस्तुत की गई है। यह विषयवस्तु लिंग, वर्ग, जातीयता, राजनीतिक विचारधारा, सैद्धांतिक दृष्टिकोण और इतने पर व्यक्त की गई विषय की स्थितियों में खुद को व्यक्त करती है; और उनमें से हर एक समझ को विकसित करता है कि एक विद्वान के लिए क्षेत्र और डेटा पर आधारित है। परिवेक्षण हेतु जिसकी निगरानी की जाती है तथा उपयुक्त सोचा जाता है, वह भी इसी मानक के बीच स्थित है।

उदाहरण के लिए मालिनोव्स्की ने ट्रोब्रिएंड अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान को क्यों नहीं देखा? निरीक्षण क्यों नहीं किया, क्या यह नहीं था कि महिलाएं अदृश्य थीं और उन द्वीपों पर अपने जीवन के लंबे समय के दौरान उन्होंने कभी उन्हें घास की स्कर्ट बुनाई या गहने बनाते नहीं देखा, लेकिन यह एनेट वेनर थे, जिन्होंने यह खोज की और बताया कि महिलाओं ने ट्रोब्रिएंड समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक भूमिका निभाई। मालिनोवस्की ने इसे अवश्य देखा होगा, लेकिन उन्होंने इसका अवलोकन नहीं किया। क्योंकि बीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल में यूरोपीय पुरुष के रूप में सामाजिकृत थे और वे महिलाओं को आश्रित और अर्थव्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम नहीं समझते थे। उन्होंने उनकी गतिविधि की व्याख्या घरेलू काम के रूप में की होगी और इसलिए उनके अवलोकन और विश्लेषण उतने महत्वपूर्ण नहीं है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मानवशास्त्री क्षेत्र में स्वयं आम मनुष्यों की तरह हैं। इसलिए सभी क्षेत्र कार्यकर्ता के अनुभव है कि वे भावनाओं और संवेदनाओं के मामले में भी स्वयं की तरह ही हैं और साथ ही आवश्यकताओं के स्तर पर भी। इस प्रकार यह असंभव है कि मानव व्यवहार के अवलोकन में एक प्रकार की भावनात्मक पृथकता को बनाए रखा जा सके, जिसे एक भौतिक विज्ञानी प्रयोगशाला में परमाणुओं के व्यवहार का या दूर के खगोलीय पिंडों का अवलोकन कर सकता है

साथी मनुष्यों के रूप में यह स्वाभाविक है और भावनात्मक रूप से किसी क्षेत्र में और किसी सूचक के साथ जुड़ना सामान्य है। अतीत में जब कि एक भ्रम भी था या कम से कम मानवविज्ञान को एक शुद्ध विज्ञान के रूप में मानने का प्रयास किया गया था, तो भावना के मामलों को व्यक्तिगत (न कि फील्ड) डायरी तक सीमित कर दिया गया था और मालिनोवस्की की मृत्यु के लंबे समय के बाद उनकी डायरी के प्रकाशन से यह संकेत मिला की उनका उस क्षेत्र से अंतरविषयिक संबंध था, जो उद्देश्यगत परियवेक्षण से बहुत दूर था, जैसा कि उन्होंने खुद के होने का अनुमान लगाया था।

समकालीन मानव विज्ञान में,विशेष रूप से क्लिफोर्ड और मार्कस की *राइटिंग कल्चर्स* (1990) जैसी पुस्तकों के प्रकाशन के बाद, यह मान्यता है कि यदि सभी अभी भी एक विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान की स्थिति का बचाव करते हैं, तो शोधकर्ता व्यक्तिपरक भागीदारी को सर्वप्रथम स्थान देने की आवश्यकता है। और यह भी स्पष्ट करने की जरुरत है कि किस क्षेत्र में किसी व्यक्ति के सूचकों के साथ अंतर किस तरह का अंतर विषयिक संबंध है। वॉन फेंडर–हैमडॉर्फ ने अपनी पुस्तक *द नेकेड नागास* में ऐसा ही किया था, लेकिन स्पष्ट इरादे से नहीं। लेकिन बाद में ट्राविक (1996: i) जैसे नृवंशविज्ञानियों ने खुद को "संस्कृति की सीमाओं पर संस्कृति के सह–निर्माता" के रूप में देखा और इसके लिए उन्होंने इसकी सीमा के एक तरफ मानवविज्ञानी और दूसरी तरफ सूचना देने वालों के बीच सममित संबंध की स्थापन का प्रयास किया।

वर्तमान नृवंशविज्ञान और मानवशास्त्रीय ग्रंथों में स्पष्टीकरण की तुलना में अधिक आख्यानों को शामिल करने की संभावना है: जैसा कि मानवविज्ञानी मानते हैं कि लोगों ने वास्तव में जो कहा है, वह विद्वान के द्वारा सार रूप में बताई गई बातों की तुलना में अर्थ का एक शक्तिशाली वाहक है। विज्ञान, विशेष रूप से कठिन विज्ञान के

अंतर्गत अध्ययन के लिए विषयवस्तु नहीं है जो खुद के लिए बोल सकता है या किसी के साथ भावनात्मक और व्यक्तिपरक पहचान के बंधन की अनुभूति कर सकता है।

यह तेजी से स्पष्ट हो रहा है कि जहां तक कठिन विज्ञान का संबंध है कहा जा रहा है कि कठिन विज्ञान के सन्दर्भ में इस बात के व्यापक होने का स्पष्ट प्रमाण है। जहाँ तक वस्तुपरकता और नैतिकता की बात है, धारणाएँ बदल रही है। अगले भाग में हम विज्ञान के संबंध में बदलती धारणा की जांच करेंगे और फिर मानव विज्ञान की स्थिति को एक विज्ञान के रूप में पुनर्विचार करेंगे।

अपनी प्रगति जांचें 3

8) एक संज्ञानात्मक रूप से निर्मित दुनिया से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9) मानवशास्त्रीय प्रेक्षणों में विषयपरकता की भूमिका की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) मानवशास्त्रीय अनुसंधान की व्यक्तिपरकता को दूर करने के लिए पद्धति में कौन से परिवर्तन आवश्यक हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 क्या विज्ञान वही है जैसा की हम सोचते हैं?

बरज़ुन (2000: 217) विज्ञान या पश्चिमी विज्ञान (हर्राव जैसे नारीवादियों के संदर्भ में) को दिए गए महत्व की एक बहुत ही सारगर्भित आलोचना को सामने रखता है। उनका कहना है कि सभी सत्य तथाकथित वैज्ञानिक पद्धति से सामने नहीं आ सकते हैं, "आंतारिक जागरूकता और सीखी गई चीजों के बीच के अंतर को जानने और समझने के लिए"। गिरते हुए सेब को देख कर न्यूटन के मन में अचानक गति के

नियम के सूत्र का आना या अचानक रेडियम मिल जाने से मैरी क्युरी को रेडियम की खोजकर्ता बना देने में सहज ज्ञान की भूमिका केवल व्यवस्थित और तार्किक सोच के उत्पाद नहीं थे, बल्कि वे कुछ आन्तरिक रहस्योद्घाटन और कुछ अन्तस्थ प्रक्रिया से प्रेरित थे, जिसे एक सामान्य बाहरी तर्कशीलता के द्वारा नहीं समझा जा सकता है। जैसा कि बरजुन ने बताया है कि हम किसी चीज़ के बारे में जान सकते हैं,जिसे नहीं जानते थे। उदाहरण के लिए, एक अनाथ को माँ के प्रेम के विषय में पता होता, परंतु उसका वास्तविक रूप क्या है, वह इसे नहीं समझ पाता है। डेकार्ट्स ने ठोस तर्क के आधार पर ज्यामिति को एक शुद्ध विज्ञान माना है, लेकिन ज्यामिति तब अस्तित्विहीन हो जाता, यदि मानव मन को आकर्षित करने के लिए 'यहां तक कि अमूर्त समीकरण बनाने के लिए यह संसार नहीं होता। एक लाइन या त्रिकोण की मात्र संभावना प्राकृतिक दुनिया की मानवीय परियवेक्षण से खींचे गए अंतिम विश्लेषण में है। उदाहरण के लिए कोई भी एक ऐसी आकृति की कल्पना नहीं कर सकता है, जिसे किसी ने कभी अनुभव न किया हो या किसी चीज़ के बारे में अमूर्त रूप में न सोचा हो, जैसे कि कोई ध्वनि, रंग या गंध। नारीवादियों द्वारा सम्मिलित आलोचना विज्ञान की ऐतिहासिकता को लक्षित करने के लिए थी, इसे एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में जाँचने के लिए नहीं, लेकिन हार्रावे को 'स्थितज्ञान' के रूप में संदर्भित किया गया था; एक ऐसा ज्ञान जो न केवल एक समय और स्थान का बल्कि एक विशेष ऐतिहासिक स्थिति का भी उत्पाद है। पश्चिमी विज्ञान को विशेषाधिकार प्राप्त था (मानव विज्ञान का प्रारंभिक काल सहित), क्योंकि यह वास्तव में एकमात्र सत्य नहीं था.लेकिन क्योंकि यह राजनीतिक उपनिवेशवाद सत्ता के एक बड़े दावे के साथ था, जिसने यह साबित करने की कोशिश की कि इसके तरीके इस संसार में जीने का एकमात्र तरीका है।

नारीवादी दृष्टिकोण से एक सच्ची निष्पक्षता हर्रावे (1988: 583) द्वारा इंगित महामारी विज्ञान की विशिष्ट स्थिति और संदर्भ को उजागर करना था और वस्तु या विषय के विभाजन से निष्पक्षतावाद की झूठी भावना पैदा करने के बारे में नहीं, बल्कि "जवाबदेह" होने के लिए हम क्या देखते हैं "। इसका मतलब यह है कि कोई भी पूर्ण वास्तविकता नहीं है ,जो शोधकर्ता के व्यक्तिपरक स्थिति के बाहर है, जहाँ तक किसी इंसान की पहुँच है। हम जो कुछ भी जान सकते हैं वह हमारे माध्यम से सामाजिक रूप में संज्ञानात्मक है, जो हमारी सीखी गई अवधारणाओं के संदर्भ में दुनिया भर में लगातार अनुवाद कर रहे हैं। हार्वे, हार्डिंग तथा अन्य नारीवादी और उपनिवेशवादी विद्वानों ने दर्शाया है कि नस्ल, वर्ग और लिंग की अवधारणाओं से विज्ञान कैसे प्रभावित हुआ है और जो ज्ञान उत्पन्न होता है, वह अक्सर उन परिस्थितियों को पुष्ट करता है, जिनके तहत इसका उत्पादन होता है। दूसरे शब्दों में, पितृसत्ता की स्थितियों के तहत उत्पन्न ज्ञान इसे सुदृढ़ करेगा और जातिवाद के तहत उत्पादित ज्ञान इसे मजबूती प्रदान करेगा।

विज्ञान की पूर्ण वस्तुनिष्ठता अब विज्ञान के भीतर से ही आ रही है। भौतिकी का क्वांटम सिद्धांत एक ऐसी दुनिया की कल्पना करता है जो पहले की तुलना में कहीं अधिक सारगर्भित और कठिन है,जैसा विश्वास पहले था। संवेदी धारणाओं की अस्थिरता और अज्ञात के विशाल विस्तार को आज गूढ़ ब्रह्मांड के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो वैज्ञानिक दावों के महत्व को कम करने में सक्षम है और छोटी से बड़ी चीजों को समझने में समर्थ है। विज्ञान के विस्तार के मोर्चे वास्तव में व्यापक ज्ञान के दावों में विश्वास से अधिक संदेह और प्रश्न पैदा कर रहे हैं, जो विज्ञान ने पहले किए

थे। आज के वैज्ञानिक ज्ञान और महामारी विज्ञान के वैकल्पिक रूपों को स्वीकार करने के लिए बहुत अधिक उदार और तैयार हैं और पश्चिमी विज्ञान की गिरावट को पहचानने के लिए तत्पर है।

अपनी प्रगति जांचें 4

11) नारीवादी विद्वानों ने पश्चिमी विज्ञान की क्या आलोचना की है?

.....

.....

.....

.....

.....

12) विज्ञान की समकालीन अवधारणा विज्ञान की शास्त्रीय प्रत्यक्षवाद अवधारणा से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 मानवविज्ञान विज्ञान के रूप में

यदि हम मानवविज्ञान को व्यक्तिपरक रूप में पहचानते हैं तो एक विज्ञान होने के अपने दावे को अस्वीकार करने के बजाय हम इसकी तुलना कठिन विज्ञानों से कर सकते हैं;यहां तक कि भौतिकी और रसायन विज्ञान की तरह यह दिखाने के लिए कि वे व्यक्तिपरकता से मुक्त नहीं हैं और संज्ञानात्मक और सांस्कृतिक उत्पादों से निकले हैं।

फिर विज्ञान क्या बनाता है? मानवशास्त्रीय पद्धति में विज्ञान अब स्पष्ट है कि जो कुछ देखा जाता है उसका वर्णन करना (अवलोकन करना) नहीं है, बल्कि स्पष्ट रूप से, ईमानदारी से और विस्तृत रूप से यह बताने के लिए कि किस परिस्थिति में इस तरह के आंकड़े एकत्र किए गए थे और किसके द्वारा किए गए थे। परिस्थिति की विषयवस्तु को तभी निपटा जा सकता है, जब उसे जाना जाता है और परिवेक्षण का हिस्सा बनाया जाता है। वर्तमान मानवविज्ञानी अब भी नृवंशविज्ञान के अभिन्न अंग के रूप में हैं: कभी–कभी वे एक अधिकर्ता के रूप में भी (ट्रैविक, 1996; पांडियन, 2014)। यह कहना उचित नहीं है कि तथ्यात्मक कुछ भी नहीं है। बहुत सारा डेटा तथ्यात्मक हैःउदाहरण के लिए जनसांख्यिकीय और जनगणना डेटा। लेकिन जो भावना डेटा से बनी होती है, उसका वर्गीकरण और विश्लेषण विद्वानों और निजी पक्षपाती लोगों द्वारा निर्देशित होता है। जिसे दूर नहीं किया जा सकता है, उसे खुले में आना चाहिए। लिखने का सचेत रूप और आत्म–जागरूक तरीका मानव विज्ञान लेखन में अपनाया

गया है (प्राइस,1983, शोस्तक, 1981 को उद्धृत उदाहरण के रूप में देखें)। मानवविज्ञान की विश्वसनीयता का दावा विवरण की अपने कठोरता में है और स्पष्टीकरण के ढांचे के भीतर विश्लेषक के स्वयं को स्वस्थ करने और इसके बाहर नहीं। वास्तविकता को भी एक ही शरीर के रूप में नहीं बल्कि बहुरूपी समझा जाता है। उदाहरण के लिए, अनुभवात्मक दुनिया को अलग–अलग निकायों के स्थान के माध्यम से अलग–अलग रूप से अनुभव किया जाता हैःसामाजिक रूप से कामुकता, लिंग, जातीयता और विकलांगता जैसे चर के माध्यम से निर्मित किया जाता है। यहाँ तक कि गुरुत्वाकर्षण के नियम भी चंद्रमा पर अलग हैं क्योंकि वे भी एक पृथ्वी के समान हैं, और शायद ब्रह्माण्ड के मायने कुछ भी नहीं। मुख्य रूप से, जिसे हम वास्तविकता के रूप में समझते हैं,वह एक विशेष संदर्भ में स्थित व्यक्ति के माध्यम से प्राप्त वास्तविकता है, क्योंकि यही एकमात्र वास्तविकता है, जो समझ में आने योग्य है। जो समझा नहीं जा सकता उसका कोई परिणाम नहीं है।

एक ही समय में प्रयोगजन्य प्रश्न महत्वपूर्ण होता है। यदि प्राप्त किया गया ज्ञान उपयोगी है तो यह विज्ञान के अंतिम लक्ष्य के लिए सही ज्ञान है, जिसका उद्देश्य मानव जीवन को बहुत अच्छा बनाने के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए है। अगर मानव की बेहतरी के लिए मानवशास्त्रीय ज्ञान का उपयोग किया जा सकता है तो वह है एक अच्छा विज्ञान।

2.6 सारांश

इस इकाई में हमने कुछ महत्वपूर्ण और दार्शनिक मुद्दों को उठाया है जिनका विज्ञान की प्रकृति और कई वर्षों के विज्ञान के ऐतिहासिक मूल्यांकन से संबंध है। यह स्पष्ट हो गया है कि विज्ञान क्या है, न केवल इसके तरीकों और इसके उद्देश्यों के संदर्भ में, बल्कि उन शक्ति के संबंधों के संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए, जो विज्ञान की परिभाषा में चले गए हैं। इतिहास के एक विशेष काल खंड में यूरोप में विकसित होने वाले ज्ञान के निकाय पर निर्देशित एक महत्वपूर्ण लेंस और ज्ञान की एक श्रेष्ठ संस्था के रूप में वैश्विक स्वीकृति के लिए जिम्मेदार राजनीतिक स्थितियों के माध्यम से देखते हुए हम अब निश्चित हैं कि यह मानव के लिए एकमात्र उपलब्धी नहीं है। वहाँ ज्ञान के कई निकाय थे और कई हैं जो तब भी भी उपलब्ध थे। विज्ञान की स्थिति भी बदल गई है और इसकी गिरावट की स्वीकार्यता के साथ–साथ यह भी मान्यता है कि मानव ज्ञान अभी भी बहुत ही महत्वपूर्ण और सीमित हैं और हम क्या जान सकते हैं, और कैसे जान सकते हैं, कि अपार संभावनाएं और असंभावनाएं भी हैं।

मानवविज्ञान ने लंबे समय से सकारात्मकता को अंतर–विषय के साथ बदल दिया है और वस्तुपरक तथा व्यक्तिपरक, आंतरिक और बाहरी और केंद्र और परिधि के झूठे द्वंद्ववाद को खारिज कर दिया है। क्लिफोर्ड (1990: 5) के रूप में, पश्चिमी विज्ञान के द्वारा त्यागे गए क्षेत्र को,जैसे कि वाक्पटुता, कल्पना और विषय–वस्तु के अलावा सभी क्षेत्रों को नृवंशविज्ञान लेखन को दे दिया गया है। ज्ञान को समग्र, राजनीतिक रूप से देखा जाता है। नैतिकता और मानवीय मूल्यों के मानदंड ने आबद्ध ज्ञान को समग्र राजनैतिक परिप्रेक्ष में देखा जाता है। इस अर्थ में मानव विज्ञान अभी भी मनुष्य के लिए एक विज्ञान है।

2.7 संदर्भ

Clifford, James and George E Marcus (eds.). (1990).*Writing Culture: The Poetics and Politics of Ethnography*. Delhi: Oxford University Press

Freeman, Derek.(1983).*Margaret Mead and Samoa: The Making and Unmaking of an Anthropological Myth.* Mass.,: Harvard University Press

Geertz, Clifford.(1973).*The Interpretation of Cultures*. New York: Basic Books

Harding, Sandra.(1991).*Whose Science? Whose Knowledge?*.Ithaca : Cornell University Press

Harraway, Donna. (1988). "Situated Knowledges: The Science question in Feminism and the Privilege of Partial Perspective", *Feminist Studies*, Vol.14, no.3, pp575-600

Harraway, Donna.(1989).*Primate Visions*.London: Routledge

Leaf, Murray J. (1979).*Man, Mind and Science: A History of Anthropology*. New York: Columbia University Press

Malinowski, Bronislaw. (1967).*A Diary in the Strict Sense of the Term*.New York: Harcourt, Brace and World

Pandian, Anand.(2014).*Ayya's Accounts*. Bloomingdale: Indiana University Press

Price, Richard. (1983).*First Time: The Historical Vision of an Afro-American People*. Baltimore: John Hopkins University Press

Shoshtak, Marjorie. (1981).*Nisa: The Life and Words of a !Kung San Woman*. Cambridge Mass.: Harvard University Press

Trawick, Margaret. (1996). *Notes on Love in a Tamil Family*. Delhi: Oxford University Press

Weiner, Annette.(1976).*Women of Value: Men of Renown*. Austin, Texas: University of Texas Press

White, Leslie A.(1949).*The Science of Culture: A Study of Man and Civilization*. Grove Press

Winch, Peter 1990(1958) *The Idea of a Social Science and its Relation to Philosophy*.London : Routledge

2.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) खंड 2.1 के पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।
2) अनुभाग 2.1 के दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
3) अनुभाग 2.1 के 9 वें और 10 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें।
4) धारा 2.1 के तीसरे और चौथे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
5) अनुभाग 2..2 के पहले, दूसरे और तीसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
6) खंड 2.2 के दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
7) अनुभाग 2.2 के 7 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें।
8) अनुभाग 2.3 के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
9) अनुभाग 2.3 के पहले और दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
10) अनुभाग 2.3 का संदर्भ लें।
11) अनुभाग 2.4 देखें।
12) अनुभाग 2.2, 2.3 और 2.4 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 मानवविज्ञान में अनुसंधान का इतिहास*

इकाई की रूपरेखा

3.0 परिचय

3.1 औपनिवेशिक काल

3.2 उत्तर–औपनिवेशिक काल

3.3 साठ और सत्तर के दशक में अग्रसर

3.4 प्रगति की ओर

3.5 मानवविज्ञान अनुसंधान का विविधीकरण

3.6 अनुप्रयुक्त और क्रियात्मक शोध

3.7 सारांश

3.8 संदर्भ

3.9 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र सीख सकेंगे :

- सामाजिक मानवविज्ञान में अनुसंधान उद्देश्यों और विधियों को विकसित व परिभाषित करना;
- अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन में विकसित होने वाली विभिन्न प्रवृत्तियों की व्याख्या करना;
- वर्तमान मानवविज्ञान का वैश्विक स्तर पर वर्णन करने में ; तथा
- यह जान सकेंगे कि अनुसंधान के इतिहास को औपनिवेशिक मानवविज्ञान, उत्तर–औपनिवेशिक मानवविज्ञान और समकालीन मानवविज्ञान में कैसे वर्गीकृत किया गया है;
- अनुसंधान इतिहास उत्तर–आधुनिकतावाद और उत्तर–संरचनावाद से कैसे प्रभावित है,की पहचान कर सकेंगे;
- मानवतावादी लक्ष्यों के विकास में इसकी भूमिका को वर्गीकृत कर सकेंगे।

3.0 परिचय

एक विषय अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य मानव विकास और मानव विविधता, जैविक (प्रजातीय) और सांस्कृतिक दोनों के लिए एक वैज्ञानिक स्पष्टीकरण तैयार करना था।

***योगदानकर्ता**–प्रो.सुभद्रा मित्रा चन्ना, (सेवानिवृत्त)पूर्व विभागाध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली. **अनुवादक**– डॉ. चित्रलेखा अंशु, फ्रीलांसर, दिल्ली.

पिछले कुछ वर्षों में, मानव आनुवांशिकी के विकास साथ, मानव जीनोम परियोजना, नस्लीय विभाजन को सतही मतभेदों के रूप में देखा जा रहा है, इसमें पारिवारिक सादृश्यता और भौतिक एवं सांस्कृतिक उद्विकास के साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इस इकाई में, हम केवल बाद के पहलूओं पर अपनी चर्चा केंद्रित करेंगे, क्योंकि भौतिक पहलू पर जैविक मानवविज्ञानियों द्वारा इसे पूरा किया जाता है और सांस्कृतिक उद्विकास के प्रारंभिक चरण को पूर्व–इतिहासकारों और पुरातत्वविदों द्वारा इसे स्पष्ट किया जाता है।

यह कोई रहस्य नहीं है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के लिए बहुत उत्साह औपनिवेशिक प्रशासकों से आया था, जिन्हें उन समाजों को समझने की आवश्यकता थी जिनपर वे शासन करने जा रहे थे। भारत में, ब्रिटिश प्रशासकों जैसे जे.एच. हटन, जे.पी. मिल्स, एच. एच. रिस्ले और अन्य, जिन्होंने ट्रॉफी के संग्रह के साथ देशज आबादी पर जबरदस्ती के आक्रमण और बल प्रयोग द्वारा जीवन शैली से संबंधित डेटा को मिश्रित किया। इन अधिकारियों द्वारा महसूस की गई तात्कालिकता को छोड़कर कोई विशेष अकादमिक ध्यान नहीं दिया गया था कि जीवन का एक तरीका गायब हो रहा था और कम से कम वे अपने लेखन में और अपने संग्रहालयों के अभिलेखों में इसे संरक्षित कर सकते थे।

3.1 औपनिवेशिक काल

इस अवधि के शुरुआती हिस्से में विचार के दो प्रमुख स्कूलों, विकासवाद और प्रसारवाद का विकास देखा गया। ये दोनों आंकड़ो (डेटा) के द्वितीयक स्रोतों के संग्रह पर आधारित थे, जिनमें यात्रा वृतांत, मिशनरियों की रिपोर्ट और वो सब कुछ था जिसका उपयोग मानव विविधता के भव्य सिद्धांतों को बनाने के लिए किया जा सकता है।चूँकि विद्वानों को यह विश्वास हो गया था कि वे एक विज्ञान का विकास कर रहे हैं, इसलिए उन्होंने प्राकृतिक विज्ञानों की तरह इसमें भी तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया जिसमें प्रारूपीकरण (टाइपोलॉजी), वर्गीकरण और एक भव्य सामान्यीकरण सिद्धांत को लक्षित किया, जो सब कुछ समझा देगा। अनुसंधान का मतलब था, भारी मात्रा में द्वितीयक आंकड़ो की तुलना कर इसे वर्गीकृत और स्पष्ट करने का प्रयास करना।विकासवादियों ने मानव जाति की मानसिक एकता और विचारों के समानांतर उद्भव द्वारा समानता को समझाया तो वहीं प्रसारवादियों ने सीमित रचनात्मकता और संपर्क के अधिक होने की ओर झुकाव पर बल दिया। भारत में, प्रसारवाद काफी लोकप्रिय था, कई विद्वान जैसे इरावती कर्वे और बी.एस. गुहा जर्मन स्कूल ऑफ डिफ्यूजनिज्म के प्रभाव में थे। कर्वे ने भारत में नातेदारी की एक क्षेत्रीय टाइपोलॉजी बनाने के लिए तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया, जबकि गुहा ने भारत में 'नेग्रिटो' समस्या पर अपने काम जैसे प्रसार के माध्यम से भौतिक विशेषताओं को समझाने की कोशिश की।

अमेरिका में लुईस हेनरी मॉर्गन और इंग्लैंड में ए. सी. हड्डन ने क्षेत्र अनुसंधान (फील्ड रिसर्च) करने का मार्ग प्रशस्त किया। मॉर्गन ने अपने नातेदारी शब्दावली का अध्ययन करने के लिए अपने घर के पास मूल अमेरिकियों का अध्ययन करना शुरू कर दिया और नातेदारी अध्ययन के पिता के रूप में जाने गये और साथ ही साथ थियरी ऑफ एथेनिकल पीरियड के अपने सिद्धांत को देकर एक प्रसिद्ध विकासवादी के रूप में स्थापित भी हुए। मॉर्गन ने नातेदारी शर्तों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए

प्रश्नावली विधि और द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन का भी उपयोग किया था, जिसने उन्हें नातेदारी शब्दावली के नियमित पैटर्न के अस्तित्व को स्थापित करने में सक्षम बनाया था। जिसे बाद में उन्होंने नातेदारी प्रणाली के रूप में नामित भी किया था। इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ए.सी. हड्डन प्रारंभ में जैविक नमूने एकत्र करने के लिए टोरेस स्ट्रेट द्वीप समूह की यात्रा पर गए थे। लेकिन वह द्वीप वासियों से इतने प्रभावित थे कि अपनी अगली यात्रा में वह अपने साथ कुछ प्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिकों को मनोवैज्ञानिक परीक्षण करने के लिए ले गये, जिनमें लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के डब्ल्यू.एच.आर रिवर्स, सी.एस.मायर्स, डब्ल्यू मैक.डगल और सी.एस. सेलिगमैनडगल प्रमुख थे। 1898 में हुए दूसरे अभियान में, रिवर्स ने अपनी प्रसिद्ध वंशावली विधि विकसित की। वह एक परिवार में मनोवैज्ञानिक प्रकारों का पता लगाने के लिए वंशवृक्ष बनाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन बाद में उन्हें सभी प्रकार के डेटा एकत्र करने के लिए इस पद्धति की महान क्षमता का एहसास हुआ।

भारत में, पहली बार फील्डवर्क करने और आदिवासियों की आबादी के बारे में फस्ट हैंड डेटा इकट्ठा करने वाले शरत चंद्र रॉय थे, जो अपनी भूमि के लोगों के लिए गहरा प्रेम रखते थे। एस सी रॉय ने न केवल बिरहोरों और बैगाओं जैसे समुदायों की जीवन शैली के बारे में विस्तार से सूचनाएं दर्ज की बल्कि उन्होंने उनकी मानवता और उनकी पीड़ा के साथ उनके हाशिए पर होने के दर्द पर भी जोर दिया। रॉय भारत में नृवंशविज्ञान अनुसंधान के अग्रणी थे और उस समय में शोध करने की सामान्य प्रवृत्ति का पालन करते हुए उन्होंने जीवन के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वस्तुगत सभी पहलुओं को रिकॉर्ड किया, कई मायनों में उनका अनुसंधान देशज दृष्टिकोण का था जिसमें वे इस दृष्टिकोण से सहमत नही थे कि वे आदिवासी आदिम या पिछड़े थे।

शोध के प्रारंभिक काल में, मानवविज्ञान ने अपने शोध को हिट और ट्रायल तरीकों से स्थापित किया, जैसे टॉरेस स्ट्रेट अभियान और फिर मालिनोवस्की द्वारा प्रसिद्ध नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफिक) फील्डवर्क जो कि एक ऐतिहासिक परिस्थिति का परिणाम था और अच्छी तरह से योजनाबद्ध भी नही था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ट्रोब्रिएंड द्वीप समूह में मालिनोवस्की का जबरन निर्वासन, जिसे अब सहभागी अवलोकन के रूप में जाना जाता है, की स्थापना की गई।मानवविज्ञानी महसूस करते हैं कि यह उन इतिहासों और संस्कृतियों के अतीत को फिर से संगठित करने का कोई उपयोग नहीं था जिनके कारण केवल अटकलें लगाई गईं। मालिनोवस्की के बाद, समाज का निरीक्षण करना और समझना बेहतर माना जाता था क्योंकि यह अध्ययन वास्तविक समय में किया जा सकता था। फ्रेंच प्रकार्यवादियों के प्रभाव में ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन ने अपने संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण को तैयार किया, जिसमें समाज के हर पहलू को एक समग्र संरचना के एक हिस्से के रूप में देखा गया, जिसे सामाजिक संरचना कहा जाता था, और एक सामंजस्यपूर्ण प्रणाली के रूप में इसके कामकाज में योगदान दिया। इस प्रकार अनुसंधान एक विशेष समाज और व्यक्तिगत विद्वानों के साथ गहरे और दीर्घकालिक जुड़ाव पर केंद्रित हो गया, जो 'अपने लोगों' के साथ लंबे समय तक बिताने के कारण विशिष्ट समुदायों के अधिकृत बन गए। जब कोई नूअर के बारे में बात करे तो इवांस–प्रिचर्ड और अंडमान आइलैंडर्स हो तो ए.आर. रेडक्लिफ–ब्राउन, जैसे कि उनके पास इन लोगों का बौद्धिक स्वामित्व था। स्थिरता और सामाजिक एकजुटता पर जोर भी आदर्श स्थिति के रूप में देखा गया था जिसके प्रति औपनिवेशिक शासन की आकांक्षा थी।

फ्रांज बोआस के नेतृत्व में अमेरिका में एक वैकल्पिक धारा विकसित हुई, जो कि ऐतिहासिक विशिष्टतावाद (हिस्टोरिकल पटिक्युलरीजम) है। यह स्कूल उपनिवेशवाद के अमेरिकी रूप का उप–उत्पाद था जहां मूल अमेरिकियों के पूरे समाज को या तो नष्ट कर दिया गया था या लोगों ने कैद में डाल दिया था। प्रकार्यात्मक स्कूल के विपरीत, बोआस ने संस्कृतियों के अध्ययन में इतिहास, मनोविज्ञान और पर्यावरण पर जोर दिया। इसमें लोककथाओं और भौतिक संस्कृति के प्रति बहुत दिलचस्पी भी थी क्योंकि लोगों की अनुपस्थिति के बावजूद इसे सांस्कृतिक तत्व के रूप में देखा जा सकता था जो कि बचे हुए मानव समुदायों में बच गए थे। बोआस के प्रसिद्ध छात्र अल्फ्रेड क्रोबर ने अपनी संस्कृति की परिभाषा को 'सुपर–ऑर्गेनिक' और 'सुपर ह्युमन' के रूप में प्रस्तुत किया।बोआस को मनोविज्ञान में रुचि थी और उन्होंने अपने छात्रों मार्गरेट मीड, रूथ बेनेडिक्ट, अल्फ्रेड इरविंग हॉलोवेल, राल्फ लिंटन और अन्य लोगों को संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञान के विपरीत, जो विशेष रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक चरों पर विश्वास करते थे,उनके स्पष्टीकरण में, अमेरिकन संस्कृति परंपरा ने मनोविज्ञान, जीव विज्ञान और पर्यावरण चर को अपने सिद्धांत और स्पष्टीकरण में शामिल किया। इस परंपरा के माध्यम से मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे कि लोककथा अध्ययन, पारिस्थितिक मानवविज्ञान, मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान और चिकित्सा मानवविज्ञान पहले विकसित हुए और बाद में मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के रूप में विश्व स्तर पर स्वीकार किए गए। अनुसंधान के ये प्रारंभिक वर्ष भी विधियों की खोज के लिए समर्पित थे, सवालों के जवाब मांग रहे थे और विषय शास्त्र की सीमाओं को नए क्षितिज की तलाश के लिए आगे बढ़ा रहे थे।

फिर भी इन शोधों में गहरी खामियां थीं, क्योंकि इनमें सामंजस्य की स्थिति में स्थैतिक, अहंकारी समाजों की एक आदर्श तस्वीर थी। यह धारणा कि स्थिरता किसी भी समाज की प्राकृतिक स्थिति है जिसे बाद के शोधकर्ताओं ने चुनौती दी थी लेकिन व्यवहारिकता(फंगक्शनलिजम) लंबे समय से प्रचलित थी क्योंकि संघर्ष पर केंद्रित विद्वानों ने संघर्ष के कार्यों की तलाश की या संघर्ष को समाज की स्वाभाविक स्थिति के रूप में देखा। यह औपनिवेशिक काल के बाद का ही समय था जब मानवविज्ञान अनुसंधान उन क्षेत्रों से और उन लोगों द्वारा किया जा रहा था जो पहले अध्ययन के लिए 'आब्जेक्ट' प्रदान कर रहे थे, जैसे कि उपनिवेशों के मूल निवासी पहले मानवविज्ञानी के 'फील्ड' का निर्माण करते थे – जो नवीन मानवशास्त्रीय शोधों में महत्वपूर्ण और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में उभर कर आया।

अपनी प्रगति जाँचे 1

1) औपनिवेशिक काल में मानवविज्ञान को एक अनुशासन के रूप में मान्यता कैसे मिली? प्रारंभिक मानव विज्ञानी कौन थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2) इस अवधि के दौरान मानवशास्त्रीय अनुसंधान की दो प्रमुख दिशाएँ क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) औपनिवेशिक काल के दौरान किए गए शोध की दिशा में कुछ प्रमुख आलोचनाएँ क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.2 उत्तर–औपनिवेशिक काल

एडवर्ड सईद जैसे विद्वानों ने गैर–पश्चिमी समाजों के प्रति पश्चिमी निर्माण की आलोचना करते हुए कहा कि पश्चिमी लोग द्वारा जो निर्माण प्रक्षेपित किया गया था वह इस बारे में अधिक था कि वे 'अन्य' संस्कृतियों के प्रति वैसी कल्पना करते हैं, जिसे वास्तव में वे पसंद करते हैं।नारीवादी आलोचना भी यूरो–केंद्रवाद के साथ–साथ एंड्रोसेंट्रिक दृष्टिकोणों की प्रधानता के खिलाफ निर्देशित थी। इन आलोचनाओं को आम तौर पर सत्ता के केंद्रों से ज्ञान के सृजन और हाशिए से आवाजों की उपेक्षा की दिशा में निर्देशित किया गया था। मानव विज्ञान में उन समाजों से अधिक विद्वानों के शामिल होने से, जिन्हें पहले अध्ययन के उद्देश्य के रूप में 'अन्य संस्कृतियों' की भांति निर्मित किया गया था, उनके परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन अब अनिवार्य थे।इतिहास की उपेक्षा करने के लिए प्रकार्यवादी मानवविज्ञानियों को आलोचना की गई थी, औपनिवेशिक शासन के कारण हुए विनाश समय उन्होंने आंखें मूंद ली थी और विभिन्न समाजों को सामंजस्यपूर्ण और संतुलित वर्णित कर रहे थे। अपने क्लासिक काम *यूरोप एंड द पीपुल विदाउट हिस्ट्री* (1982)में एरिक वुल्फ, ने उस इतिहास का वर्णन किया जो दुनिया भर के लोगों के यूरोप के संपर्क में आने से पहले था।यह यूरो–केंद्रवाद था जिसने पश्चिमी विद्वानों को यह महसूस करने के लिए रोका था कि इन समाजों का एक इतिहास था जो यूरोप से स्वतंत्र था । उन संस्कृतियों के बीच परस्पर संबंध रहा, व्यापार में लगे, यात्राएं हुई और प्रवसन भी किया। कुछ लेबल जो औपनिवेशिक काल के दौरान बनाए गए थे, जैसे कि 'एसेफलस' समाज या नेतृत्वहीन समाज, औपनिवेशिक शासन के प्रभाव के लिए जिम्मेदार थे।अफ्रीका में पहले के समृद्ध और नेतृत्वविहीन आबादी वाले राज्यों के समुदायों को तभी कम कर दिया गया था और वे जंगलों तक सिमट गये थे, जब मानवविज्ञानी उनका अध्ययन करने आए थे। जिस समयावधि में इनका अध्यनन किया गया तब तक उन्हें वहीं स्थिर कर दिया गया था, मानवविज्ञानियों ने उनकी मानवता और इतिहास को तब तक लूट लिया था।

औपनिवेशिक काल के बाद के महत्वपूर्ण परिवर्तन तब हुए जब उपनिवेशों के मूल निवासी भी मानवविज्ञानी बन गए और अपने समाजों का अध्ययन करने लगे। एम. एन. श्रीनिवास जो कि ए. आर.रेडक्लिफ–ब्राउन के छात्र थे और भारत में कूर्ग के अपने अध्ययन में संरचनात्मक–कार्यात्मक मॉडल का प्रयोग कर रहे थें। लेकिन एक स्वदेशी मानवविज्ञानी के रूप में, उन्होंने जाति के बारे में सिद्धांत तैयार किए जो देशज शब्दों 'जाती' और 'वर्ण' को पुनर्जीवित करने सहित एक अंदरूनी सूत्र की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।ब्रिटिश स्कूल का भारतीय शिक्षाविदों पर एक मजबूत प्रभाव था और संरचनात्मक–कार्यात्मक स्कूल ने कई मानव विज्ञानियों को प्रभावित किया, लेकिन साथ ही भारतीय मानवविज्ञानी ने कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं और विचारों को विकसित किया और योगदान दिया जो विशेष रूप से स्थानीय संदर्भो से संबंधित थे। इस तरह का एक योगदान एल.पी.विद्यार्थी द्वारा दिया गया 'सेक्रेड काम्प्लेक्स' (पवित्र संकुल) की अवधारणा थी, जो बिहार के गया के संबंध में था।विद्यार्थी, रॉबर्ट रेडफील्ड और शिकागो स्कूल के काम से प्रभावित थे। उनकी 'पवित्र संकुल' की अवधारणा पवित्र भूगोल, पवित्र विशेषज्ञों और पवित्र प्रदर्शनों की परस्पर संबंधित अवधारणाओं को एक साथ लाती है। जो यह दर्शाती है कि कैसे ये पवित्र परिसर विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों की बैठक अथवा समाज के लिए नोडल बिंदु बनाते हैं और सृजन के बिंदु भी हैं। विद्यार्थी के बाद, पवित्र संकुल अवधारणा का उपयोग भारत के अन्य पवित्र केंद्रों के लिए अन्य विद्वानों द्वारा भी किया गथा, जिसमें बैद्यनाथ सरस्वती द्वारा गया पर किया काम भी शामिल था।हालांकि, भारत में मानवविज्ञान ने अपने प्रत्यक्षवादी चरित्र को बनाए रखा। यद्यपि ब्रिटिश शास्त्रीय सिद्धांतों और अमेरिकी सांस्कृतिक परंपरा दोनों का इनपर मजबूत प्रभाव था, मानवविज्ञानियों ने भारतीय समाज के उन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया जो भारतीय संदर्भ में प्रासंगिक थे।

इस प्रकार जाति अध्ययन के बाद ग्राम अध्ययनों की बहुतायत थी जिसने जाति व्यवस्था की व्यापकता के माध्यम से भारत में ग्रामीण और शहरी समाजों के बीच संबंधों का जिक्र करते हुए सार्वभौमिकता और पारलौकिकता जैसी अवधारणाओं को जन्म दिया।जैसा कि मैककिम मैरीट, एम.एन. श्रीनिवास, रॉबर्ट रेडफील्ड, एस सी दुबे जैसे और अन्य विद्वानों द्वारा दिखाया गया है, विवाह और नातेदारी के माध्यम से सामाजिक संपर्क की निरंतरता थी, क्योंकि एक ही जाति के सदस्य शहरों और गांवों दोनों में फैले हुए थे और जाति के आधार से जुड़े थे।इससे ग्रामीण से शहरी केंद्रों तक सांस्कृतिक तत्वों का एक निर्बाध प्रवाह हुआ है और यहां तक कि आदिवासी तत्वों को मुख्यधारा और उसके विपरीत के धर्म और संस्कृतियों में भी शामिल किया गया है। इस प्रकार पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर में जगन्नाथ और उनके भाई–बहनों के प्रतीक आदिवासी देवताओं के साथ मजबूत समानता रखते हैं, जबकि कई आदिवासी देवता उच्च हिंदू देवताओं के केवल आदिवासी संस्करण हैं जैसे, शिव। रेडफील्ड की 'लघु' और 'महान' परंपरा (ग्रेट एवं लिटिल ट्रेडिशन)की अवधारणाओं को भी बड़ी सफलता के साथ भारतीय परिदृश्य पर लागू किया गया था।जाति और जनजातियों के साथ होने वाले पूर्वाग्रह ने जनजाति–जाति की निरंतरता की अवधारणा को जन्म दिया और इसे निर्मल कुमार बोस और डीएन मजूमदार जैसे कई प्रतिष्ठित भारतीय विद्वानों द्वारा विकसित किया गया। मजुमदार ने पूर्वी भारत के कई जनजातियों के बीच फील्डवर्क किया था और यह दिखाया कि वे कैसे बदलते हैं। उनका यह भी विचार था कि जनजाति की श्रेणी एक लचीली और ऐतिहासिक इकाई थी जो निश्चित नहीं थी। इस अवलोकन की बाद के कई विद्वानों द्वार पुष्टि भी की गई है।

अपनी प्रगति जाँचे 2

4) नारीवादी मानवविज्ञानियों द्वारा औपनिवेशिक मानवविज्ञान की आलोचना किस महत्वपूर्ण क्षेत्र में की गई थी ?

.....

.....

.....

.....

.....

5) उस भारतीय विद्वान का नाम बताइए जो ए.आर.रेडक्लिफ ब्राउन के छात्र थे ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) जाति के अध्ययन में भारतीय मानव विज्ञानियों का क्या योगदान था?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) 'पवित्र संकुल' की अवधारणा किसने दी? चर्चा करें और कुछ अन्य विद्वानों का उल्लेख करें जिन्होंने इसी अवधारणा पर काम किया।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8) भारतीय विद्वानों द्वारा जनजातियों पर किस तरह का शोध किया गया था? इन शोधों से क्या अवधारणाएँ सामने आईं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 साठ और सत्तर के दशक में अग्रसर

पिछली सदी के मध्य तक जो साठ और सत्तर के दशक तक थी, दुनिया भर में मानवशास्त्रीय अनुसंधानों में काफी विविधता थी। विचलन या अपसरण की प्रारंभिक अवधि के बाद, एक वैश्विक मानवशास्त्रीय संस्कृति का उद्‌भव हुआ जो विद्वानों के बीच संपर्क में वृद्धि के साथ–साथ एक अकादमिक संस्थान से दूसरे तक के विद्वानों द्वारा गतिकी के कारण संभव हुआ। ब्रिटिश और अमेरिकी मानवविज्ञान के बीच अंतर नए सिद्धांतों और दृष्टिकोणों के साथ–साथ अनुसंधान के नए क्षेत्रों के रूप में कम हो गया।

इस अवधि में शोध को अवगत करने वाले सिद्धांत और दृष्टिकोण मार्क्सवादी थे जिनका फ्रांसीसी विद्वानों जैसे क्लॉड मीलासौक्स, मौरिस गोडेलियर और इमैनुअल टेरे के बीच काफी प्रभाव था। पियरे बोरडियू के अभ्यास के सिद्धांत की व्यापक रूप से सराहना की गई और मानव विज्ञानियों द्वारा इसका उपयोग भी किया गया। यद्यपि वे मार्क्सवादी नहीं है परंतु परम्परागत रूप से उनकी आदतों पर मार्क्सवाद का प्रभाव स्पष्ट है। फील्डवर्क हर समय मानवविज्ञानी का आधार बना रहा। जबकि मार्क्सवादी विद्वानों ने सामाजिक इतिहास के निर्माण के लिए इतिहास और द्वितीयक स्रोतों की तलाश की, लेकिन क्षेत्र–टिप्पणियों के अलावा जातीय–इतिहास और मौखिक परंपराओं का व्यापक रूप से उपयोग किया गया।मार्क्सवाद और संरचनावाद (लेवी–स्ट्रॉस और एडमंड लीच) अभी भी प्रत्यक्षवाद में निहित थे। लेवी–स्ट्रॉस के संरचनावाद ने विश्लेषण के मूल उपकरण के रूप में द्विविचार विरोध (बाइनरी अपोजिशन) किया था और उन्होंने इसे मानव मन का अचूक चरित्र माना था। लेवी–स्ट्रॉस ने अत्यधिक व्यक्त किए गए व्यवहार के बजाय मानव विचार के स्तर पर समाज की गहरी अंतर्निहित संरचनाओं की तलाश की। उनके अनुसार सभी समाज विनिमय की अंतिम विश्लेषण प्रणालियों में थे जो लोगों को एक साथ रखते थे।

उपनिवेशवादी आलोचना ने मानवशास्त्रीय सिद्धांत के मौजूदा यूरो–केंद्रितवाद को चुनौती दी और कई अवधारणाओं को यूरो–केंद्रितवाद से अगल कर उसे खारिज या बदल दिया गया। सामाजिक वास्तविकता को देखने के लिए धीरे–धीरे सोचने का द्विविचारीय तरीका धीरे–धीरे धुंधला होकर कम संरचित तरीके से प्रतिस्थापित किया जा रहा था। इस प्रकार, जैसा कि हम पहले ही उन विद्वानों को देख चुके हैं, जिन्होंने भारतीय समाज का गहराई से अध्ययन किया है, जल्द ही महसूस किया कि जनजाति और जाति को एक दूसरे के विपरीत या अलग नहीं देखा जा सकता है, लेकिन अक्सर यह अस्पष्ट सुराखयुक्त सीमाएं होती हैं। इसके अलावा न तो यह किसी भी

विशिष्ट तरीके से बंधे और न ही निश्चित थे और न ही जनजातियों या जातियों के रूप में नामित समुदाय संभावित संगठनों और जीवन के तरीकों की एक विस्तृत श्रृंखला पर कब्जा कर लेते हैं।

संरचनावाद के बाद उत्तर–संरचनावाद और घटना–क्रिया विज्ञान (फेनोमेनोलॉजी) का पालन किया गया था। मानवविज्ञान अनुसंधान अधिक परिष्कृत और कम संरचित व निष्पक्ष बन गया। यह महसूस किया गया कि अन्य मनुष्यों के साथ व्यवहार करते समय पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ होना संभव नहीं था। क्षेत्र की स्थिति अंतर–विषयवाद में एक सी थी और मानवविज्ञानी का व्यक्तिपरक आत्म विश्लेषण एक अभिन्न अंग था। नारीवादी दृष्टिकोण ने यहीं नींव हासिल की, क्योंकि यह प्रदर्शित किया गया था कि महिला मानवविज्ञानी डेटा संग्रह और विश्लेषण दोनों में एक अलग परिप्रेक्ष्य सामने लाती है। इसलिए कई स्थापित अकादमिक कार्यों को यह कहकर विघटित किया गया था कि उनके शोध को एक पुरुष पूर्वाग्रह द्वारा सूचित किया गया था। नारीवादी विद्वानों ने वैज्ञानिक पद्धति के पूर्वाग्रह और व्यक्तिपरकता का भी संकेत दिया, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश वैज्ञानिक अध्ययन जो दावा करते थे वे वास्तव में मौजूदा शक्ति पदानुक्रम, नस्लीयता, यौन और अन्य लोगों की विधिपूर्वक पुष्टि हैं। ऐसे विद्वानों में डोना हार्वे और सैंड्रा हार्डिंग प्रमुख हैं।

भारत में नारीवाद की शुरुआत लीला दूबे ने की थी, जैसे कि पैट कैपलान, मारिया मीस, बीना मजुमदार जैसे विद्वान और अन्य लोग जिन्होंने भारतीय समाज में जैंडर निर्माण के साथ–साथ महिलाओं पर मानवशास्त्रीय ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लीला दुबे और इरावती कर्वे जैसे विद्वानों ने जाति और लिंग के संबंध के साथ–साथ भारतीय महिलाओं की भूमिकाओं और आकांक्षाओं पर हिंदू ग्रंथों के प्रभाव को दिखाया था।

कुछ प्राचीनता के बावजूद, घटना–क्रिया विज्ञान बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के पक्ष में पाए गए, क्योंकि प्रत्यक्षवाद और निष्पक्षता के साथ स्थिर विचारों ने सामाजिक विज्ञानों की स्वीकृत व्यक्तिपरक प्रकृति को देखते हुए छोड़ दिया था। मानव व्यवहार की संरचनाओं की पहचान और उनके अनुभव को मूर्त अनुभव(सम्मिष्टता) के माध्यम से सामाजिक वास्तविकता को समझने के लिए वर्गीकरण से स्थानांतरित कर दिया गया। ये शोध इस आधार पर आगे बढ़े कि समाज एक निर्माण है और विभिन्न ऐतिहासिक और व्यक्तिपरक स्थितियों में अभिनेताओं द्वारा इसे अलग तरह से अनुभव किया जाता है। शक्ति पदानुक्रम की बजाए शक्ति क्षेत्र से संचालित होती है, जहां शक्ति विसरित और लचीली होती है और इसे केवल जुड़ाव के माध्यम से समझा जा सकता है। प्रख्यात घटना संबंधी कार्य डी सर्टिओ, डसोर्डस और अन्य लोगों द्वारा किए गए हैं। भारत में, इस दृष्टिकोण का उपयोग दलितों जैसे सीमांत समूहों की स्थिति को समझने के लिए किया गया है, उदाहरण के लिए चन्ना और मेन्चर के संग्रह (2013)। इसका उपयोग मार्गरेट ट्रेविक और करिन कपाड़िया जैसे मानवविज्ञानियों ने भी किया है। कपाड़िया के अछूत तमिल महिलाओं के अध्ययन में कृषि श्रम में महिलाओं के योगदान पर काफी तथ्यात्मक डेटा शामिल हैं। लेकिन उनके काम की ताकत सीमांत महिलाओं की व्यक्तिपरक कथाओं को व्यापक रूप से दर्ज करने में है, जो उनके जीवन में एक गहरी अंतर्दृष्टि देती है। शर्मिला रेग जैसे कुछ लोगों ने दलित महिलाओं के नरेटिव (आख्यानों) की रिकॉर्डिंग को पाठकों पास इसे से समझने के लिए छोड़ दिया है। अनुभवजन्य अनुसंधान को सामाजिक पीड़ा की अवधारणा को

तैयार करने के लिए के लिए चिकित्सा मानवविज्ञान में विस्तारित किया गया था, इस अवधारणा को आर्थर क्लेनमैन और वीना दास द्वारा सूत्रीकृत और विकसित किया गया। भारतीय संदर्भ में इसका उपयोग भोपाल गैस त्रासदी के पीड़ितों की पीड़ा का विश्लेषण करने के लिए किया गया था।जीवनी और आत्मकथात्मक शोध, जिसे बाद में ऑटो–एथनोग्राफी के रूप में जाना जाता है, जीवन–इतिहास पर किए गए शुरूआती कार्यों का विकास ऑस्कर लुईस के स्मरणीय कार्य, *पेड्रो मार्टिन– ए मैक्सिकन पेजेंट एंड हिज फैमिली* (1964) से होता है। जब से मानवशास्त्री पहले के 'देशज' समुदायों से उभरे हैं, तब से ऑटो–एथनोग्राफी अनुसंधान में लोकप्रियता बढ़ी है। भारतीय मूल के मानव विज्ञानी आनंद पांडियन (2014) के एक हालिया काम को उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। जीवनी और आत्मकथात्मक आख्यानों का विलय करने वाली एथनोग्राफी को तीन–पीढ़ी की गहराई देने के लिए पांडियन ने अपने दादा के जीवन इतिहास को अपने में मिला लेते हैं।

मानवविज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र के विस्तार के साथ शहरी और वैश्विक अध्ययनों में मानवविज्ञान का उल्लेख किया जाना चाहिए। शहरी अध्ययन ने संयुक्त राज्य अमेरिका में पचास के दशक में एक शुरुआत की थी और बाद में पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो गया। गया और काशी में पवित्र संकुल के अध्ययनों में शहरी क्षेत्र भी शामिल हैं। सत्तर के दशक में सिल्विया वटुक ने भारत में शहरी नातेदारी पर सराहनीय शोध किया था। आर.एस. खरे ने आगरा के जाटव और ओवेन लिंच ने लखनऊ के चमारों के बीच काम किया। दोनों ने हाशिए पर रहने वाले विशिष्ट समुदाय का अध्ययन करने के लिए मध्यम आकार के शहर चुने और नृवंशविज्ञान(एथनोग्राफी) विधियों का इस्तेमाल किया। समाजशास्त्रियों और शहरी भूगोलवेत्ताओं के एकाधिकार वाले बड़े शहरों (मेगासिटीज) पर मानवशास्त्रियों द्वारा बहुत काम नहीं किया गया है।

अपनी प्रगति जाँचे 3

9) भारतीय मानवविज्ञान के लिए नारीवादी विद्वानों के योगदान पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

10) घटनाशास्त्रीय दृष्टिकोण से मानवविज्ञान में किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11) ऑटो–एथ्नोग्राफी से आप क्या समझते हैं? कुछ उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12) क्या मानवविज्ञानी शहरी क्षेत्रों में शोध करते हैं? वे किस तरह की कार्यप्रणाली का उपयोग करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 प्रगति की ओर

बीसवीं सदी के अंत तक, हालांकि मानवविज्ञानी तेजी से पलायन के मामले में दुनिया भर में होने वाले परिवर्तनों की अनदेखी नहीं कर सकते थे, दुनिया भर में सूचना और पूंजी के प्रवाह के कारण अब अनुसंधान भूमंडलीकरण और इसकी प्रक्रियाओं पर शुरू हुए। जैसे ही अभिरूचि इस क्षेत्र में स्थानांतरित हुई, यह महसूस किया गया कि पारंपरिक एथनोग्राफिक विधियां और अवधारणाएं अब परिणाम नहीं दे सकती थी। यह अब एक स्थानीय ब्रह्मांड और अधिक या कम बंधी हुई आबादी या समुदाय के साथ काम नहीं कर रहा था। इसके बाद कार्यप्रणाली (प्रविधि) को कई साइटों और अवधारणाओं को शामिल करना पड़ा जैसे कि वो लैंडस्केप(परिदृश्य) जो पूरक या क्षेत्र को बदलने के लिए उभरा, जिसे बहु–पक्षीय अनुसंधान के रूप में जाना जाता है। स्थान को सक्रिय और जीवित के रूप में देखा गया न कि केवल क्रिया की पृष्ठभूमि के रूप में। अनुसंधान को उस दिशा में निर्देशित किया गया था जिसे बहु–पक्षीय नृवंशविज्ञान के रूप में जाना जाता है जो समय और स्थान के माध्यम से लोगों की गतिविधियों की गिनती रख सकता है। ऐसे अनुसंधान का एक उदाहरण पांडियन का काम है जो उनके परिवार को तीन देशों, बर्मा (म्यांमार), भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के माध्यम से बताता है।

वैश्वीकरण पर शोध से यह भी पता चला कि स्थानीय स्तर पर क्या हो रहा है, उदाहरण के लिए, बांग्लादेश में महिला कर्मचारियों की वृद्धि वैश्विक शक्तियों से प्रभावित होती है। वैश्विक और स्थानीय के बीच यह संबंध और आदान–प्रदान दुनिया के सभी हिस्सों में अनुसंधान का केंद्र बन गया है क्योंकि इसे एक विशेष क्षेत्र के वैश्विक बलों, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक के व्यापक नेटवर्क से अलग करना मुश्किल है जिसके भीतर यह सेट निर्मित है।

अपनी प्रगति जाँचे 4

13) 21वीं सदी में मानवविज्ञान अनुसंधान में उभरती प्रवृत्तियों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 मानवविज्ञान अनुसंधान का विविधीकरण

एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान ने कई उप–शाखाओं में विविधता हासिल की है क्योंकि इसके विद्वानों ने अभिरूचियों को कई क्षेत्रों में विस्तारित किया गया था। विषय अनुशासन के शुरुआती चरण में मनोविज्ञान, चिकित्सा मानवविज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में रुचि थी। फ्रांज बोआस की पुस्तक द माइंड ऑफ द प्रिमिटिव मैन (1911) और उनके छात्रों द्वारा संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल के विकास ने मानव मन की कार्यप्रणाली पर काम करने की स्वाभाविक रुचि का समर्थन किया था।बाद में मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान की शाखा मानवविज्ञान के पूर्ण विकसित क्षेत्र के रूप में विकसित हुई। मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी की जड़ें स्वदेशी हीलर्स(देशज चिकित्सकों) के अध्ययन में थीं और उपचार (हीलिंग) की रस्में जादू-टोने के बारे में थी जैसा कि *नवज्यो* इंडियन के बीच क्लाइड क्लूकोहॉन का काम था। यद्यपि भारत में मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान की शाखा बहुत दूर तक विकसित नहीं हुई है, फिर भी चिकित्सा मानवविज्ञान आज अनुसंधान का एक प्रमुख क्षेत्र बन गया है। चिकित्सा मानवविज्ञान ने विद्वानों के शुरुआती कार्यों से प्रेरणा प्राप्त की जैसे कि पी.ओ.बोडिंग, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संथाल चिकित्सा पर काम करने वाले बोडिंग के काम को अब एक क्लासिक माना जाता है। चिकित्सा मानवविज्ञानियों ने स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों जैसे कि शमनवाद के अध्ययन के साथ इस विधा को शुरू किया था , जो अभी भी अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं, वे कई अलग–अलग स्थानों में स्वास्थ्य–लाभकारी व्यवहार का भी अध्ययन करते हैं और स्वास्थ्य और कल्याण के संज्ञानात्मक पहलुओं पर भी अपना ध्यान लगाए हुए हैं। भारत में, चिकित्सा मानवविज्ञानी आदिवासी स्वास्थ्य के क्षेत्रों में काम करते हैं लेकिन साथ ही मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रमों और एचआईवी एड्स और आपदा प्रबंधन जैसे सामान्यीकृत क्षेत्रों में भी काम करते हैं।

औपनिवेशिक काल के बाद, तीसरी दुनिया के देशों में विकास और राष्ट्रीय प्रगति के सवालों पर अधिक चिंता थी। निर्मल कुमार बोस और डी. एन. मजूमदार जैसे कई मानवशास्त्री भारत में अनुशासन की शुरुआत से ऐसे मुद्दों से जुड़े थे। भारत में, आलोचनावादी मानव विज्ञान के आधुनिकतावादी रुझानों ने तत्काल ही सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के समाधान के लिए अनुसंधान के पक्ष में पिछली सीट ले ली है। इस संबंध में, विकास से संबंधित समस्याओं से निपटने के लिए बड़ी मात्रा में अनुसंधान का निर्देशन किया गया है। वास्तव में, विकासात्मक मानवविज्ञान के विविध रूप आज मानवविज्ञान पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा है।

हालांकि, भारत में विकासात्मक मानवविज्ञान(डेवलपमेंट एंथ्रोपोलॉजी) में अनुसंधान करने के दो रुझान हैं। एक प्रकार इन विकास कार्यक्रमों को अनिवार्य (और आवश्यक भी) मानता हैं और फिर इन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के सर्वोत्तम रूप की दिशा में अनुसंधान को निर्देशित करता हैं। इनमें प्रतिरक्षण(टीकाकरण), मलेरिया उन्मूलन, परिवार कल्याण, महिलाओं के खिलाफ हिंसा आदि जैसे स्वास्थ्य मुद्दों से निपटने वाले लोग शामिल हो सकते हैं।दूसरी तरह का शोध प्रकृति में अधिक महत्वपूर्ण है और विकास की प्रकृति जैसे, बांधों के निर्माण और वन क्षेत्रों में खनन और आदिवासियों को जीवन के विदेशी तरीके अपनाने के लिए मजबूर करने के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। इस दिशा में काफी शोध वॉन–फ्यूरर हैमेंडोर्फ, बी.के रॉय बर्मन, फेलिक्स पाडेल, वाल्टर फर्नांडिस, बीडी शर्मा और जैसे अन्य प्रख्यात मानवविज्ञानियों ने किया है। इनमें से अधिकांश कार्यों ने विकास परियोजनाओं के प्रभाव के अन्तर्गत आदिवासियों की दयनीय दशा को उजागर किया है जो लंबे समय से पश्चिम द्वारा अस्वीकार किए गए शास्त्रीय पश्चिमी मॉडल का आंख मूंदकर पालन करते हैं।बीसवीं शताब्दी के अंतिम भाग से वर्तमान तक, विकास–संबंधी अनुसंधानों के अनुरूप, पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति काफी अनुसंधान रुचि को निर्देशित किया गया है। इनमें से कई जो तथाकथित विकास परियोजनाओं के कारण पर्यावरणीय क्षरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन लोगों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण अनुसंधान के साथ ओवरलैप होते हैं जो विकास के पारंपरिक आर्थिक मॉडल के नकारात्मक पहलुओं को दिखाने की कोशिश करते हैं और जो केवल संसाधनों के शोषण और पूंजीगत लाभ के निर्माण के लिए संचालित होते हैं।

पौधों और जड़ी–बूटियों के मूल उपयोग की पहचान करने के लिए चिकित्सा मानवविज्ञान के साथ पर्यावरणीय अनुसंधान भी किया जाता है जो स्वास्थ्य का दर्शन भी हैं, जो मनुष्यों को पर्यावरण से जोड़ता है। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों पर केंद्रित मानवविज्ञान की एक विशेष शाखा भी उभरी है जो अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण स्थान भी पा रही है। अब जनजातीय और स्वदेशी समाजों और उनके ज्ञान की प्रणालियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है जिसमें गैर–पश्चिमी चिकित्सा पद्धतियां और जैव विविधता के संरक्षण और संरक्षण के स्वदेशी साधन शामिल हैं। एक वर्ग के लोग पहले आदिम माने जाते थे और उनके ज्ञान को अंधविश्वास के रूप में सम्मान से प्रतिस्थापित किया गया और इसका भी अहसास है कि आदिवासियों को औद्योगिक और पूंजीवादी समाजों से जुड़े लोगों की तुलना में मानव–पर्यावरण संबंधों की बेहतर समझ है।इस तरह के अहसास को विश्व स्तर पर हो रहे पर्यावरणीय आंदोलनों से शुरू किया गया है जो कि एक मानव–केंद्रित दुनिया के दृष्टिकोण को एक प्रकृति–केंद्रित दुनिया के रूप में स्थानांतरित करना चाहते हैं और मनुष्यों को केवल विशेषाधिकार प्राप्त प्रजाति के रूप में नहीं, बल्कि कई के साथ व्यवहार करने वाला देखना चाहते हैं। आदिवासियों और वनवासियों ने सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर वास्तविकता को जिया है, उसने अपने जीवन के तरीकों पर एक अलग लेंस के साथ ध्यान केंद्रित किया है। अब यह महसूस नहीं किया जाता कि आदिवासियों को विकसित करने की जरूरत है लेकिन दूसरे लोग उनसे सीख सकते हैं कि कैसे अच्छी तरह से और समावेशी (टिकाऊ) तरीके से जीना है।

भारत जैसे विकासशील समाज के सामने आने वाली कई अहम समस्याओं को देखते हुए कुछ प्रमुख क्षेत्रों पर शोध पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत महसूस की गई है, जहां मानवविज्ञानियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली नृवंशविज्ञानी (एथनोग्राफिक)

विधियों को उत्कृष्ट अनुसंधान के रूप में देखा जाता है। अगले अनुभाग में, हम ऐसे कुछ अप्रत्याशित क्षेत्रों की जांच करेंगे ।

अपनी प्रगति जाँचे 5

14) उन कुछ क्षेत्रों का वर्णन करें जिनमें अब मानवविज्ञानी शोध कर रहे हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

15) चिकित्सा मानवविज्ञान अनुसंधान द्वारा क्या समझा जाता है और इसकी प्रासंगिकता क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

16) मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विकास की समझ में क्या बदलाव हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 अनुप्रयुक्त और क्रियात्मक शोध

मानव अधिकार एक ऐसा क्षेत्र है जहां सीमांत और वंचित समुदायों के साथ सबसे अधिक बार काम करने वाले मानवविज्ञानियों ने खुद को निर्देशित किया है। जैसा कि पहले से ही आदिवासी आबादी के साथ भारतीय मानवविज्ञानी के कामों का उल्लेख किया गया है, उन्होंने इन लोगों के साथ अन्याय किया और एस.सी. रॉय ने इन लोगों पर हुई हिंसा का अध्ययन कर उल्लेख किया है। समाज के नीचे या हाशिए पर स्थित लोगों के खिलाफ शोषण और हिंसा के अपराध के लिए संरचनात्मक परिस्थितियों पर प्रकाश डालने के अतरिक्त कई मानवविज्ञानियों ने सूचना के प्रसार और उनके संबंध में नीति निर्माण को प्रभावित करने के लक्ष्य के साथ इन लोगों के व्यक्तिपरक कष्टों पर भी प्रकाश डाला है। यद्यपि मानवविज्ञान एक अनुशासन के रूप में उपनिवेशी प्रशासकों को तथाकथित उपनिवेशों पर शासन करने में मदद करने के लिए शुरू हुआ था, लेकिन अधिकांश मानवविज्ञानियों ने अपनी स्थिति के आधार पर उन लोगों के

साथ सामंजस्य स्थापित किया जिनके साथ उन्होंने अध्ययन किया, और जल्द ही शासकों की तुलना में शोषितों के प्रति अपनी सहानुभूति बदल दी। तब से मानवविज्ञान अनुसंधान ने दुनिया भर में कई स्वदेशी समुदायों जैसे,मूल अमेरिकियों, माओरिस ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों और अफ्रीकी जनजातियों की सहायता की है।

मानवविज्ञानी ने अन्य हाशिए के समुदायों जैसे नस्लीय, यौन और जातीय रूप से हाशिए के समुदायों के साथ भी अनुसंधान किया है।

अनुप्रयुक्त अनुसंधान (एप्लाइड रिसर्च) के अन्य क्षेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और चिकित्सा मानव विज्ञान अनुसंधान के विस्तार के साथ गरीबी और बीमारी से जुड़े मुद्दों से निपटने की रणनीतियों के लिए जानकारी प्रदान कर रहे हैं। आपदा प्रबंधन एक अन्य क्षेत्र है जिसमें मानव विज्ञान अनुसंधान अपना योगदान दे रहा है ।

मानवविज्ञानियों ने कल्याण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और विकास के लिए सहभागी अनुसंधान जैसी विधियां प्रदान की हैं। इसमें मानवविज्ञान विस्थापन, पुनर्वास और सभी प्रकार के जनसांख्यिकीय अनुसंधान पर काम करने के लिए सहायता प्रदान करने वाले एक प्रमुख अनुशासन के रूप में उभरा है। मानव विज्ञान आदानों के कुछ नए क्षेत्र प्रबंधन और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में भी हैं। वे नीति बनाने में मदद करते हैं और अपने शोध के माध्यम से मौजूदा नीतियों के आलोचकों के रूप में भी कार्य करते हैं।

जैविक मानवविज्ञानियों द्वारा किए गए जेनेटिक और फोरेंसिक अनुसंधान आपराधिक जांच और कानूनी प्रक्रियाओं में मदद करते हैं।

मानवशास्त्रीय शोध मानवता को सबसे पहले रखने के अपने पहले सिद्धांत द्वारा निर्देशित है लेकिन समकालीन दुनिया में वे पर्यावरण और सभी प्रजातियों के वैश्विक समुदाय के लिए भी चिंता दिखा रहे हैं। मानवविज्ञानी शास्त्रीय अर्थशास्त्री द्वारा दी गई संकीर्ण भौतिकवादी और साधनवादी परिभाषा से दूर एक संदर्भ में कल्याण, विकास और मानव सुख जैसी अवधारणाओं को समझने और बनाने में लगे हैं। इस अर्थ में, मानवविज्ञान अनुसंधान इस ग्रह की निष्पक्षता, न्याय और स्थिरता के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है।

अपनी प्रगति जाँचे 6

17) मानवविज्ञान अनुसंधान के कुछ अनुप्रयोगों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

यह इकाई इस बात का विस्तृत विवरण प्रदान करती है कि मानवविज्ञान अनुसंधान विकास के विभिन्न चरणों से कैसे गुजरा है। यह मानवशास्त्रीय अनुसंधान के संचालन पर विद्वतापूर्ण अंतर्दृष्टि के साथ अध्ययन किए गए समाजों और समुदायों के बदलते

परिदृश्यों के साथ बढ़ता रहा। इकाई शिक्षार्थियों को यह जानने में मदद करती है कि जैसे–जैसे विषय बढ़ता गया, वैसे–वैसे लोगों के शोध के तरीके बढ़ते गए। मानवविज्ञानी अनुसंधानों ने उपनिवेशवादियों और उनकी सरकारों के लिए काम करने के साथ समाज में बदलाव लाने के लिए, अपने ज्ञान को अपनी जांच में लागू किया भी किया। गांवों के अध्ययन में एक से अधिक साइटों को अपने अध्ययन में शामिल करके अपने ज्ञान के क्षितिज को विस्तार दिया और विद्वानों को प्रभावित किया है। अनुसंधान और इसे करने के तरीके हमेशा विकसित होने वाली एक प्रक्रिया है और इस पाठ का उद्देश्य शिक्षार्थियों को यह बताने में सहायक है कि, मानवशास्त्रीय जांच कैसे की गई हैं और विभिन्न स्थितियों में इसका अलग–अलग इस्तेमाल किया जा सकता है ताकि सर्वोत्तम संभव परिणामों को प्राप्त किया जा सके।

3.8 संदर्भ

Boas, Franz. 1911. *The Mind of the Primitve Man*. New York: The Macmillan Company

Channa, Subhadra and Joan Mencher (eds.) 2013.*Life as a Dalit*. New Delhi: Sage Publications

Kapadia, Karin. 1995. *Siva and Her Sisters: Gender, Caste, and Class in Rural South Asia*. Boulder, Colo.: Westview Press

Lewis, Oscar. 1964. *Pedro Martin- A Mexican Peasant and His Family*. Austin: University of Texas Press

Vidyarthi, L.P 1961 The Sacred Complex in Hindu Gaya, Bombay: Asia Publishing House

Wolf, Eric 1982. Europe and the People without History, Berkeley: University of California Press

3.9 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) अनुभाग 3.1 देखें

2) इस अवधि के दौरान मानवविज्ञान अनुसंधान की प्रमुख दिशाएँ विकासवाद और प्रसारवाद थीं।

3) संदर्भ हेतु अनुभाग 3.1 के अंतिम पैराग्राफ देखें ।

4) अनुभाग 3.2 के पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।

5) एम. एन. श्रीनिवास

6) अनुभाग 3.2 के दूसरे पैराग्राफ (परिच्छेद) का संदर्भ लें।

7) अनुभाग 3.2 के दूसरे पैराग्राफ को देखें।

8) उत्तर हेतु अनुभाग 3.2 के दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।

9) अनुभाग 3.3 के 6 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें।

10) अनुभाग 3.3 के 7 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें

11) उत्तर हेतु अनुभाग 3.3 के 8 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें

12) अनुभाग 3.3 के 9 वें पैराग्राफ का संदर्भ लें

13) अनुभाग 3.4 देखें।

14) अनुभाग 3.5 देखें।

15) अनुभाग 3.5 के पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें ।

16) उत्तर हेतु उपखंड 3.5 के 2, 3, और 4 पैराग्राफ का संदर्भ लें।

17) अनुभाग 3.6 देखें ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY